अस्सी दिन में
दुनिया का चक्कर

अस्सी दिन में दुनिया का चक्कर

ओंकार शरद

आलोक इण्डस्ट्रीज
३५ चक (त्रिपालिया), इलाहाबाद

प्रकाशक

आलोक इण्डस्ट्रीज
३५ चक (त्रिपालिया) इलाहाबाद

प्रथम संस्करण १९९०

मूल्य

तीस रुपये

कम्पोजिंग

निओ साफ्टवेयर कन्सलटैन्टस
९०७ मुट्ठीगंज इलाहाबाद

मुद्रक

सुलभ मुद्रणालय
७०४ मुट्ठीगंज इलाहाबाद

बच्चों,

आज मैं तुम्हें जो कहानी सुना रहा हूँ, उसका लेखक है जूलिस बर्न। जूलिस फ्रान्स में पैदा हुआ था। उसने फ्रेंच भाषा में बच्चों के लिए बडी अच्छी-अच्छी किताबे लिखी हैं। उसकी किताबों में यह खूबी है कि उसने किस्से-कहानी के बहाने छोटे बालकों को बहुत-सी जानने योग्य बातें बतलाई हैं।

'अस्सी दिन में दुनिया का चक्कर' जूलिस की बहुत प्रसिद्ध और खूब पढी जाने वाली पुस्तक है। तुम्हारे हाथ में यह जो किताब है वह जुलिस की फ्रेंच भाषा में लिखी पुस्तक का सक्षिप्त हिन्दी रूपान्तर है।

यदि तुम्हें यह कहानी अच्छी लगी तो हम तुम्हे जूलिस बर्न की और भी कई कहानियाँ सुनायेंगे।

—लेखक

सैलानी और उनका नौकर हरफन-मौला

आज से बहुत वर्ष पहले की बात है।

लदन की किसी गली मे फिलास फौन नाम के एक सज्जन रहते थे। अजीव मस्त-मौला स्वभाव के धुनी आदमी थे। जव जो भी मन में आता, वही कर बैठते। जिधर को जी चाहता, उधर ही को मुँह उठा कर चल देते। काम-धाम कुछ था नहीं। दिन भर अखबार पढना, गप-शप करना, दोस्तो के साथ ताश खेलना और अड्डे मारना-यही उनका काम था। अपने इसी सनकीपन के कारण वे अपने यार-दोस्तो मे 'सैलानी' के नाम से प्रसिद्ध हो गये थे। हमें भी उनका यह नाम बिल्कुल ठीक जँचता है। इसलिए हम भी उन्हें फिलास फौन न कह कर सैलानी ही कहेगे।

हॉ, तो सैलानी अपने घर मे अकेले ही थे। जोरू न जाँता, बस खुदा से नाता। बस, एक नौकर था। सो एक दिन उस पर नाराज होकर आपने उसे निकाल बाहर किया। बेचारे नौकर का कुसूर सिर्फ इतना था कि वह सैलानी के कहे अनुसार उनकी हजामत के लिए खूब उबलता हुआ पानी न लाकर कुछ कम गरम पानी ले आया था। नौकर भला आदमी था। उसे जव मालिक ने निकाल दिया तो उसने सोचा कि एक नौकर के बिना मालिक को तकलीफ होगी, सो मालिक के सामने एक नया नौकर लाकर उसने खडा कर दिया।

सैलानी ने उससे पूछा, 'क्यों जी, तुम्हारा नाम क्या है ?'

उसने जवाब दिया, 'मेरा नाम जीन है। लेकिन लोग मुझे हरफन मौला कहते है। क्योकि मै हर फन में उस्ताद हूॅ। हर जगह काम कर सकता हूॅ। हर जगह जाने के लिये तेयार रहता हूँ।'

उसकी बात सुन कर सैलानी ने कहा, 'अच्छी बात है। तुम्हारा नाम भी बडा अच्छा है। तुम आदमी भी बडे काम के जँचते हो। क्या तुम मेरे घर नौकरी करोगे ?'

'जी हाँ।'

'तुम्हे हमारी नौकरी की शर्तें मालूम हैं ?'

'जी हाँ, आपके पुराने नौकर ने सब बता दिया है।'

'अच्छी बात है। तुम आज दूसरी अक्टूबर, बुधवार की दोपहर के साढे ग्यारह बजे से मेरे नोकर हुये। समझे।' इतना कह कर सैलानी ने अपनी टोपी उठायी और उसको अपने सिर पर रख कर बिना कुछ कहे सैर-सपाटे के लिये घर से बाहर निकल पडे।

हरफन मौला जब घर मे अकेला रह गया तो उसने सैलानी के मकान को ऊपर से ले कर नीचे तक, एक कोने से ले कर दूसरे कोने तक देखना-भालना शुरू कर दिया। उसके रहने के लिये ऊपर के जीने मे जगह दी गयी थी। जगह उसको बहुत पसन्द आयी। नीचे के कोठे से उसकी कोठरी के लिये बिजली की घटी और बात करने का चोंगा लगा हुआ था। मेज के ऊपर एक घडी रखी हुई थी जो सैलानी के कमरे में रखी एक ठीक वैसी ही घडी से बिजली के तार द्वारा जुडी हुई थी। यह इसलिये कि जिसमे दोनो घडियों की सुइयाँ हमेशा ठीक एक चाल से चलती रहे।

हरफन मौला के कमरे मे घडी के पास एक तख्ती टँगी हुई थी। पढने से मालूम हुआ कि उस तख्ती पर हरफन मौला के रोज के कामकाज का लेखा था। सवेरे के आठ बजे से लेकर, जब कि सैलानी सो कर उठते थे, दोपहर के साढे ग्यारह बजे तक, जब कि सैलानी ताश खेलने के लिये क्लब में जाते थे, उसमे क्या-क्या काम करना पडेगा, यह सब उस तख्ती के ऊपर लिखा हुआ था—आठ बज कर तेइस मिनट पर चाय-पानी तैय्यार करना, नौ बज कर सैंतीस मिनट पर हजामत के लिये पानी गरम करना, दस बजने मे बीस मिनट बाकी रहे तब उनके नहाने के लिये पानी रखना—इत्यादि, इत्यादि। उसी प्रकार दोपहर के साढे ग्यारह बजे से लेकर रात के बारह बजे तक का सारा काम-काज भी हरफन मौला को समझा दिया जाता था।

□□□

पृथ्वी के चक्कर की तैयारी

घर से निकल कर सैलानी घूमते-घामते, नपे-तुले कदम रखते हुये ठीक साढे ग्यारह बजे अपनी क्लब मे जा पहुँचे। वहाँ पहुँच कर उन्होंने सब से पहले भोजानालय की राह ली। बारह बज कर सैंतालिस मिनट पर उन्होने अपना भोजन समाप्त किया। वहाँ से उठ कर सीधे पुम्तकालय मे गये। वहाँ पर नौकर ने उनके सामने 'टाइम्स' अखबार लाकर रखा दिया। पौने चार बजे तक उसका पढना खतम कर के उन्होंने दूसरा अखबार हाथ मे लिया। उसको खतम कर के थोडा-सा जलपान करने के लिए भोजनालय मे गये। जब छ बजने में बीस मिनट बाकी रहे तो फिर मे पुम्तकालय में आ बैठे और एक तीसरे अखबार को हाथ मे लेकर उसके पन्ने उलटने लगे।

आध घटे के बाद उनकी मित्र-मडली कल्ब मे आ पहुँची और ताश-बाजी उडने लगी। इस मडली मे लदन के बडे-बडे साहूकार, बैंक के मालिक और व्यापारी शामिल थे। ताश खेलने के साथ-साथ गपशप भी उडने लगी। उनमें से टामस नाम के एक व्यापारी ने पूछा, 'क्यों भाई राल्फ, अब इम डकैती के सबध में क्या होगा ?'

उनमें स्टुअर्ट नाम का एक इजीनियर भी था। वह बोला, 'होगा क्या, बैंक के रुपये गये समझो।'

राल्फ ने कहा, 'नहीं जी, चोर हम लोगों के हाथ से कहीं नही जा सकता। उसको पकडने के लिये बडे-बडे होशियार जासूस छोडे गये हैं।'

स्टुअर्ट ने पूछा, 'लेकिन क्या आप लोगों को चोर का हुलिया भी मालूम है या यों ही ?'

राल्फ ने कहा, 'मालूम तो है, लेकिन वह आदमी चोर नहीं है।'

'आप ने भी खूब कहा। जो आदमी बैंक से पचपन हजार पाउण्ड के नोट उड़ा कर ले गया है, वह चोर नही तो क्या साहूकार होगा ?'

राल्फ ने जवाब दिया, 'हाँ, यही तो बात है।'

एक दूसरे व्यापारी ने कहा, 'तो फिर वह कोई सौदागर होगा।'

सैलानी ने अपना सिर उपर उठा कर कहा, 'अखबार के पढने से तो मुझे यह मालूम हुआ कि यह किसी भले आदमी का काम है।'

असल में सब लोग एक डकैती के बारे में बात कर रहे थे जो तीन दिन पहले सितबर की उन्तीस तारीख को लदन की बैंक में हो गयी थी। खजान्ची की अलमारी मे से किसी ने पचपन हजार पाउन्ड के नोटों का पुलिन्दा गायब कर दिया था।

चोरी का पता चलते ही लिवरपूल, ग्लास्गो, हेवर, स्वेज, न्यूयार्क सरीखे मुख्य बदरगाहों पर बडे-बडे जासूस भेज दिये गये थे। चोर का पता लगाने वाले को दो हजार पाउन्ड नगद और बरामद की हुई रकम में से पाँच पाउन्ड प्रति सैकडे का इनाम भी बोल दिया गया था। साथ ही बन्दरगाहों पर रहने वाले सरकारी नौकरों को इस बात की सूचना दे दी गयी थी कि वे लोग हरेक चढते-उतरते यात्री की

खानातालाशी ले लिया करें।

चोर पकडा जायेगा या नहीं, लदन मे सब जगह इस बात की चरचा की जाती थी। किन्तु सैलानी की मित्र-मडली चोरी के इस मामले में वडी दिलचस्पी ले रही थी, क्योकि उस मडली के वहुत से आदमी उस बैंक के साझीदार थे।

स्टुअर्ट ने कहा, 'चोर वडा चालाक आदमी जान पडता है। उसे पकड पाना बडा मुश्किल है।'

राल्फ ने कहा, 'अजी हजरत, वह भाग कर जायेगा कहाँ ?'

स्टुअर्ट ने जवाव दिया, 'इतनी बडी दुनिया तो पडी है।'

सैलानी ने धीरे से कहा, 'दुनिया कभी जरूर बडी थी, अव तो नही है।'

'कभी बडी थी, इसका क्या मतलब ? क्या अब दुनिया पहले से छोटी हो गयी है ?'

राल्फ ने जवाव दिया, 'जी हाँ, जरूर छोटी हो गयी है। सैलानी का कहना बिल्कुल ठीक है। दुनिया छोटी हो गयी है, क्योंकि आज से सौ-साल पहले उसके चारो ओर यात्रा करने मे जो समय लगता था, अव उसका दसवॉ हिस्सा भी नहीं लगता। इसीलिये तो मैं कहता हूँ कि चोर पकडा भी जा सकता है और भाग कर निकल भी जा सकता है।'

'भाइ राल्फ, दुनिया के छोटी हो जाने का तुमने भी अच्छा सुवूत दिया, तुम दुनिया के चारो ओर तीन महीने में

सैलानी ने बीच ही मे कहा, 'अजी, कहाँ तीन महीने, अस्सी दिन में।'

एक व्यापारी ने कहा, 'हाँ भाई, सैलानी का कहना बिल्कुल ठीक है। अस्सी दिन से अधिक नहीं लग सकते। एक अखबार मे मैंने इस बात का ब्यौरा भी पढा है कि अब अस्सी दिन मे किस प्रकार दुनिया के चारो ओर चक्कर लगाया जा सकता है।'

स्टुअर्ट ने कहा, 'अच्छा साहब, अस्सी दिन ही सही। लेकिन रास्ते की कितनी ही झझटें और मुसीबतें, आँधी और पानी, जहाज का टकराना, रेल का बिगड जाना, ये सब इसमें शामिल नही है।'

सैलानी ने कहा, 'अजी जनाब, इन सब को शामिल करके तब तो बात।'

'रहो भी, यह सब कहने भर की बाते हैं। यात्रा करने पर आटा-दाल का भाव मालूम पड जायेगा।'

सैलानी ने जवाब दिया, 'करके दिखा दूँ, तब तो कहोगे कि हाँ ।'

स्टुअट ने कहा, वाह रे मेरे मिट्टी के शेर! देखूँ तो किस तरह करते हो ?'

'यह कौन सी बडी बात है ? तुम कहो तो मैं अभी चलने को तैयार हूँ। चलो, हम तुम दोनो चले।'

स्टुअर्ट बोला, 'अजी जनाब, मुझे माफ कीजिये। मेरी जान ऐसी फालतू नही। लेकिन मैं इस बात के लिये चार हजार पाउण्ड की बाजी लगाने के लिए तैयार हूँ कि अस्सी दिन में दुनिया का चक्कर लगा आना बिल्कुल असम्भव है।'

सैलानी ने जवाब दिया, 'अजी जनाब, बिल्कुल सभव है। आप भूले किस भाव में हैं ?'

'तो फिर कर के दिखा दो न।'

सैलानी ने कहा, 'अस्सी दिन मे पृथ्वी का चक्कर ?'

'जी हाँ।'

'वडी खुशी से।'

'अव ?'

'इसी समय लेकिन मैं तुमसे एक बात कहे देता हूँ। इस यात्रा का सारा खर्च तुम्हारे ही मत्थे मढा जायेगा। बैंक मे मेरे बीस हजार पाउन्ड जमा हैं। यदि तुम कहो तो मैं खुशी से उनकी वाजी लगाने के लिये तैयार हूँ।'

सैलानी के एक मित्र ने कहा, 'अरे भाई ग्सलानी, ऐसी बेवकूफी का काम मत करो। बीस हजार पाउन्ड थोडे नहीं होते। अगर रास्ते मे जरा भी गडबडी हो गयी तो इतनी बडी रकम से हाथ धो वैठोगे।'

सैलानी ने कहा, ' अजी, कहाँ की गडवडी लगायी है ?'

'लेकिन अस्सी दिन से ज्यादा तो नहीं लगेग ?'

सैलानी बोला, 'अरे भाई, कह तो दिया कि अस्सी दिन से न एक मिनट कम और न एक मिनट ज्यादा।'

'अजी, तुम हँसी कर हरे हो।'

सैलानी ने जवाव दिया, 'जव हमारी तुम्हारी पक्की पूरी हो चुकी तो फिर हँसी कैसी ? अगर मुझे पृथ्वी का चक्कर लगाने में अस्सी दिन से ज्यादा लग जायें तो फिर बीस हजार पाउण्ड तुम्हारे हुये। अब तो राजी हो न ?'

सव लोगो ने आपस में सलाह कर के कहा, 'हाँ राजी हैं। अच्छा तो फिर लो मिलाओ हाथ। पक्की रही।'

सैलानी ने हाथ मिला कर कहा, 'पक्की रही। गाडी

आठ बज कर पैंतालिस मिनट पर छूटती है। मैं उसी से रवाना हो जाऊँगा।'

'आज ही रात को ?'

'हाँ,' आज ही रात को।' फिर सैलानी ने अपनी जेब से डायरी निकाल कर उसको देख कर कहा, 'आज दूसरी अक्टूबर, बुधवार है। तुम मुझको दिसम्बर की इक्कीसवीं तारीख को शनिवार के दिन पौने नौ बजे सध्या समय, लदन के इसी कमरे के भीतर मौजूद देख लेना। ऐसा न होने पर बैंक मे मेरे जो बीस हजार पाउण्ड जमा हैं, वे सब आप लोगों के हो जायेगे। उस रकम की वसूली के लिए मैं बैंक को एक चेक भी लिखे देता हूँ।'

घड़ी ने सात बजाये और पचीस मिनट के बाद सैलानी मित्रों से विदा हो पन्द्रह मिनट मे अपने घर आ पहुँचे। सीधे अपने कमरे मे गये और हरफन मौला को बुला कर बोले, 'दस मिनट के अदर हम लोगो को डोवर के लिये रवाना होना है। हम लोग दुनिया का चक्कर लगाने जा रहे हैं।'

हरफन मौला ने ताज्जुब मे आ कर कहा, 'दुनिया का चक्कर ?'

सैलानी ने कहा, 'हाँ, दुनिया का चक्कर और सो भी अस्सी दिन मे। अब अधिक देर करने का काम नही है।'

हरफन मौला ने पूछा, 'हुजूर, कुछ कपडे-लत्ते भी साथ में ले चलियेगा या नहीं ?'

'कपडे-लत्ते की जरूरत नही। एक दरी से काम चल जायेगा। अपने और हमारे लिये दो कमीजें, तीन जोड़े मोजे एक थैले में रख लो। मेरा कम्बल भी साथ में ले लेना। फिर

रास्ते में जिस चीज की भी जरूरत पडेगी, खरीद ली जायेगी। जाओ, जल्दी करो।'

आठ बजते-बजते हरफन मौला सैलानी के कहे अनुसार बसना-बोरिया बाँध कर तैयार हो गया। सैलानी भी तैयार थे। चलते-चलते नौकर से बोले, 'क्यो भाई, कोई चीज रह तो नही गयी ?'

'नही साहब।'

'अच्छी बात है। तो इस थैले को सभालो। इसमे बीस हजार पाउण्ड के नोट हैं।'

मालिक और नौकर दोनों घर से बाहर निकले और एक घोडागाडी किराये पर कर के आठ बज कर बीस मिनट पर स्टेशन पर जा पहुँचे।

हरफन मौला गाडी से नीचे उतरा। उसके पीछे सैलानी भी उतरे। गाडीवान को भाडा देकर उन्होंने हरफन मौला से पेरिस के लिए दो टिकट खरीदने को कहा।

आठ बज कर पैतालिस मिनट पर सैलानी और हरफन मौला गाडी के अन्दर बैठे। पाँच मिनट बाद सीटी हुइ और गाडी स्टेशन से छूट गयी।

□□□

जासूस की जासूसी

अक्टूबर की नवीं तारीख बुधवार के दिन 'मगोलिया' नामक जहाज सवेरे ग्यारह बजे स्वेज के बदरगाह पर पहुँचने का था।

जहाज के आने की बाट जोहते हुये दो आदमी बडी देर से घाट के ऊपर इधर से उधर घूम रहे थे। उनमे दूसरा लन्दन की पुलिस का एक जासूस था। उसका नाम फिक्स था। बंक की डकती क बाद आने-जाने वाले यात्रियो पर नजर रखने के लिये स्वेज के बन्दरगाह पर उसकी तैनाती हुइ थी। उससे कह दिया गया था कि यदि किसी आदमी पर उसका चोर होने का सन्देह हो तो वह उस पर अपनी नजर रखे और उस समय तक उसका पीछा न छोडे जब तक कि लदन से उसक नाम का गिरफ्तारी का वारंट न आ जावे।

दो दिन हुये जब फिक्स को लदन से एक तार मिला था। उसमें पुलिस जिस आदमी पर चोर होने का सन्देह कर रही थी उसकी हुलिया का बखान था। फिक्स बडा खुश हुआ। इनाम के रुपयो के लोभ से वह बडी मुस्तैदी से यात्रियो की जाँच-पडताल रखता था। आज जहाज के आने मे देर होती देख वह उतावला हो उठा। उसने बन्दरगाह के अफसर से पूछा, 'क्यों भाइ, आज तुम्हारा जहाज देर से तो नही आ रहा ?

'नही जी, वह बिल्कुल ठीक समय पर आयेगा। अभी तो ग्यारह बजने में बहुत दर है।'

इतना कह कर अफसर अपने दफ्तर के भीतर चला

गया। फिक्स अकेला ही इधर से उधर टहलने लगा। इतने मे उसने लगातार सीटी बजने की आवाज सुनी और जहाज भक-भक धुऑ उडाता हुआ ठीक ग्यारह बजे बन्दरगाह पर आ लगा।

यात्रियों की बहुत भीड थी। कुछ जहाज के भीतर ही रहे, और बहुत मे जहाज से उतर कर नावो पर चढ कर किनारे पर आये। फिक्स हरेक यात्री को घूर-घूर कर देखने लगा।

इतने मे एक मुसाफिर कुलियों और यात्रियों के साथ धीगा-मुश्ती करता हुआ, भीड को चीर कर फिक्स के पास आया, और उससे बन्दरगाह के अफसर का दफ्तर पूछने लगा। साथ ही मुसाफिर ने उसको पासपोर्ट दिखाते हुए कहा कि उस पर अफसर से दस्तखत करवाना चाहता है। फिक्स ने पासपोट को हाथ मे लेकर उस पर अपनी नजर डाली। उसको यह देख कर बडा ताज्जुब हुआ कि पासपोर्ट मे उसके मालिक की जो हुलिया दी हुई थी वह उस हुलिया से बिल्कुल मिलती-जुलती थी जो कि लदन की पुलिस ने उसके पास भेजी थी।

उसने मुसाफिर से कहा, 'यह तो तुम्हारा पासपोर्ट नही है।'

मुसाफिर ने कहा, 'मेरे मालिक का ह।'

'तुम्हरा मालिक कहॉ है ?'

'जहाज पर।'

'लेकिन इस बात की शिनाख्त के लिये कि यह पासपोट तुम्हारे मालिक का है, उसको खुद यहॉ पर आना चाहिये।'

'क्या उनके आय बिना काम नही चलेगा ?'

'बिल्कुल नहीं।'

'अच्छा मुझे दफ्तर तो बता दीजिये।'

दफ्तर उस कोने पर है।' कह कर जासूस ने वहाँ से दो सौ गज की दूरी पर एक इमारत की ओर इशारा किया।

'तो फिर मै मालिक को लिवा लाऊँ।' कह कर मुसाफिर ने जासूस को सलाम किया और जहाज पर वापस आया।

जासूस जल्दी से भीड को छाँटता हुआ दफ्तर मे पहुँचा ओर अफसर से बोला, 'मुझ चोर का पता चल गया। वह तुम्हारे जहाज के ऊपर है। मैं अभी-अभी उसके नौकर से बातचीत करके चला आ रहा हूँ।'

अफसर ने कहा, 'अच्छा साहब, जरा मैं भी आपके उस चोर की हुलिया देख लूँ। लेकिन अगर वह सचमुच ही चोर है तो वह मेरे दफ्तर मे कभी नही आयेगा। क्योंकि कोई चोर ऐसा बेवकूफ नही होता कि वह गली-गली अपनी हुलिया दिखलाता फिरे। और फिर हिन्दुस्तान जाने के लिये पासपोर्ट पर मेरे दस्तखत करवाने की जरूरत भी नही।'

इतने मे बाहर किसी के आने की आहट सुनाई पडी। और दो अजनबी आदमी दफ्तर के भीतर आये। इनमें से एक तो वही नौकर था जिससे कि घाट के ऊपर मिस्टर फिक्स से बातचीत हुई थी और दूसरा उसका मालिक था। मालिक ने अपनी जेब से पासपोर्ट निकाला। उसको अफसर के सामने रखा और कहा कि आप महरबानी कर के इस पर अपने दस्तखत कर दीजिये।

अफसर ने पासपोर्ट को पढ कर कहा, 'तुम्हारा ही नाम फिलास फौन उर्फ सैलानी है ?'

अजनवी ने जवाव दिया, 'जी हाँ।'

'तुम क्या सीधे लदन से आ रहे हो ?'

हाँ।'

'ववई जाओगे ?'

हाँ।'

'लेकिन जनाव, क्या आप को यह वात नहीं मालूम कि ववइ जाने के लिए पास-पोर्ट पर मेरे दस्तखत करवाने की जरूरत नही।'

सेलानी ने जवाव दिया, 'मुझको यह वात अच्छी तरह स मालूम है। लेकिन इस बात के सुवूत के लिये कि मै आज के दिन स्वेज के वन्दरगाह पर मौजूद रहा, मुझे अपन पास-पोट पर आप के दस्तखतो की जरूरत है।'

अच्छी वात है।' कह कर अफसर ने पासपोर्ट पर दस्तखत कर दिय और तारीख डाल दी। साथ ही उस पर दफतर की मुहर भी लगा दी। सैलानी ने पासपोट लेकर जेव में डाला। अफसर को सलाम किया और नौकर को साथ ले जहाज पर जा वैठा।

जासूस वोला, क्यो साहव, देख ली आपने चोर की हुलिया ?'

अफसर ने जवाव दिया, 'मुझे तो वह बहुत भला आदमी जान पडता है।'

फिक्स ने कहा, 'शायद आप का कहना ठीक हो। लेकिन मेरे पास चोर की जो हुलिया भेजी गयी है। वह

बिल्कुल उससे मिलती-जुलती ह। मैं इसका पता लगाये बिना नही रहूँगा। नौकर मालिक से कुछ सीधा जान पडता है। वह जल्दी हाथ मे आ जायेगा। उससे मुझे बहुत जल्दी असली बात मालूम हो जायेगी। अत म जाता हूँ। फिर मिलूँगा। अच्छा नमस्कार।' आर ऐसा कह कर जासूस हरफन मौला की खोज मे दफ्तर से बाहर निकला।

जहाज पर पहुँच कर सैलानी ने सबसे पहले अपनी नोट-बुक बाहर निकाली और उसमे यह बाते दर्ज की।

बुधवार, दूसरी अक्टूबर को रात आठ बज कर पैंतालीस मिनट पर लदन से चला।

बुधवार नवीं अक्टूबर को दिन को ग्यारह बजे पेरिस होता हुआ स्वेज पहुँचा।

सैलानी बडे हिसाबी-किताबी आदमी थे। उन्होंने अपनी नोट-बुक मे पहले से ही इस बात का हिसाब लगा रखा था कि उन्हे अक्टूबर की दूसरी तारीख से दिसम्बर की इक्कीस तारीख तक (अस्सी दिन मे) किस दिन, किस समय कहाँ पहुँचना चाहिये। इस हिसाब से उन्हें अपनी पूरी यात्रा मे इस बात का पता चलता गया कि वे किस स्थान पर कब और कितनी जल्दी या देरी से पहुँचे। लेखा-जोखा करने से मालूम हुआ कि वे स्वेज अपने हिसाब से ही पहुँचे थे। न जल्दी, और न देर मे।

□□□

जासूस और हरफन मौला की दूसरी भेट

जहाज दसवी अक्टूबर को स्वेज बन्दरगाह से छूटा। दूसरे दिन अचानक जहाज मे हरफन मौला की उस आदमी से फिर भेट हो गयी। जिसने कि स्वेज के बन्दरगाह पर उसको अफसर के दफ्तर का पता बताया था। हरफन मौला उसके पास पहुँचा और नमस्कार कर के बोला, 'क्यो साहब, आप ही तो मुझको स्वेज के बन्दरगाह पर मिले थे न ?'

जासूस ने जवाब दिया, 'हाँ, तुम शायद उसी अंग्रेज के नौकर हो।'

'आप बिल्कुल ठीक कहते है मिस्टर '

'मेरा नाम फिक्स है।'

'मिस्टर फिक्स, जहाज में आप को देख कर मुझे बडी खुशी हुई है।'

मिस्टर फिक्स ने पूछा कहो, तुम्हारे मालिक फिलास फोन तो अच्छी तरह स हैं न ?'

'जी हाँ मिस्टर फिक्स, वे बिल्कुल अच्छी तरह से है। मैं भी अच्छी तरह से हूँ। जहाज मे तो मुझे बडी चटपटी भूख लगती है। खूब डट कर खाता हूँ।'

'और तुम्हारे मालिक का क्या हाल है ? मैं उन्हें कभी जहाज से बाहर निकलते नहीं देखता।

'न, उन्हे ऐसी बातों का शौक नही।'

उस दिन से फिक्स और हरफन मौला मे अक्सर बातचीत हो जाती। जासूस उसको किसी तरह अपनी बातो मे लाना चाहता था। इसलिये वह उससे खूब घुल-घुल कर

बाते किया करता। हरफन मौला उसको बड़ा अच्छा आदमी समझने लगा।

जहाज तेजी के साथ आगे बढता रहा था। स्वेज और अदन के बीच 1310 मील का अन्तर है। कम्पनी के टाइम-टेबुल मे इस यात्रा के लिये 138 घटे का समय दिया गया था। 13 तारीख की रात को जहाज ने बाबुलमदब को पार किया ओर उसके दूसरे दिन छ बजे शाम को कोयला लेकर अदन से छूट गया।

जहाज अब हिन्द महासागर मे होकर जाने लगा। इतवार के दिन बीस अक्टूबर को लगभग बारह बजे उन लोगों को हिन्दुस्तान का किनारा दिखाई पडने लगा। और ठीक साढे चार बजे जहाज ने बबइ के बन्दरगाह पर लगर डाला।

सैलानी को अपने हिसाब से बाईस अक्टूबर को बबई पहुँचना था। लेकिन जहाज बीस अक्टूबर को ही वहाँ पहुँच गया, इसलिये उन्होने अपनी नोट-बुक मे दो दिन पहले पहुँचने की बात लिख ली।

पॉच बजते-बजते सब मुसाफिर जहाज से नीचे उतर आये। कलकत्ते के लिए गाडी ठीक आठ बजे छूटती थी। इसलिये सैलानी ने जल्दी से अपने नौकर को बाजार सोदा करने के लिये भेजा और आठ बजे तक स्टेशन पर वापस आ जाने के लिये कह दिया। इधर सैलानी महाशय लम्बे-चौडे कदम रखते हुए पासपोर्ट पर दस्तखत करवाने के लिये दफ्तर मे पहुँचे।

सैलानी के जहाज पर से उतरने के बाद जासूस सीधा

कोतवाली पहुँचा और कोतवाल साहब का सारा हाल सुना कर पूछने लगा कि चोर को गिरफ्तार कर लेने के लिये लदन से कोई वारट तो नही आया है।

लेकिन वारट अभी तक ववई नही पहुँचा था और पहुँच भी कैसे सकता था ? क्योकि वारट सैलानी के चल देने के वाद लदन से रवाना किया गया था। जासूस अपना सा मुँह लेकर वहाँ से चला आया। किन्तु वारट के न आने तक उसने सैलानी के पीछे लगे रहने का इरादा कर लिया था।

हरफन मौला वाजार से सौदा खरीद कर शहर घूमने लगा। आफत का मारा वह एक मदिर के सामने जा निकला। उस समय मदिर मे आरती हो रही थी। शख-झाला आदि की आवाज सुन कर उसे यह जानने की वडी इच्छा हुई कि भीतर क्या हो रहा है। उसने आव देखा न ताव, जूते पहने ही खट-पट करता हुआ सीधा मदिर के भीतर घुसा चला गया। उसको देखते ही लोगो ने चिल्लाना शुरू कर दिया— अरे दूर हो, दूर हो। मदिर के भीतर यहाँ ईसाई कहाँ से घुस आया ? मगर हरफन मौला-जीन साहव ने पीठ फेरने का नाम नही लिया। तव पुजारियो ने उसका नाम-धाम पूछे विना आँखे मींच कर उसको मारना-पीटना शुरू किया। घूसे और लाते पडने लगी। ऐसा पीटा कि हजरत को छठी का दूध याद आ गया। हालत यह हुई कि जूते कही, पोटली कहीं, टोपी कही और आप कही। मुक्केवाजी के फन मे हरफन मौला ने भी अपने हाथ दिखलाये। लेकिन इतने आदमियों के सामने उसकी एक भी नही चली। पुजारी जव उसको पीटते-पीटते थक गये तो उसको ढकेल कर मदिर के
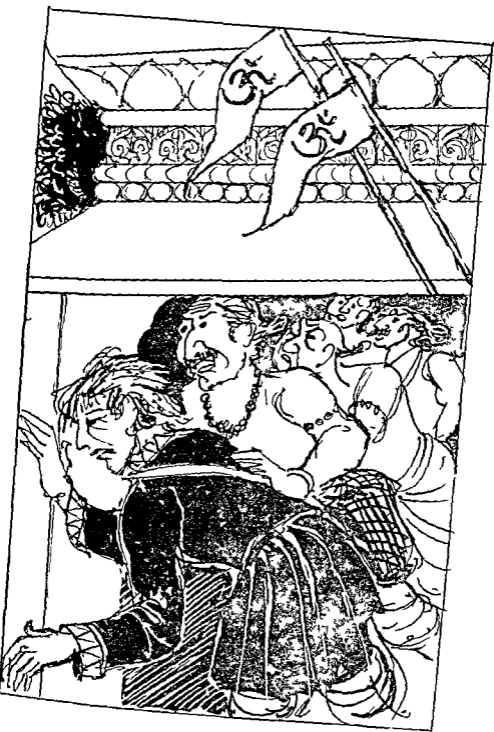
बाहर कर आये। जान बची लाखों पाये। हरफन मौला ने छूटते ही सीधे स्टेशन पर आकर ही दम लिया।

तेज भागने के कारण हाँफता-हाँफता हुआ नगे पैरों, नगे सिर और बिना सौदा-पत्ते क आठ बजने में पाँच मिनट पहले वह स्टेशन पहुँचा।

फिक्स भी वहाँ पर मौजूद था। अब उसे मालूम हुआ कि सैलानी आज ही रात को कलकत्ता जा रहा है तो वह भी उसके पीछे चलने के लिये तैयार होकर आ गया था। अँधेरे मे हरफन मौला ने फिक्स को नही देखा। मगर जासूस ने उसको अपने मालिक से आप-बीती सब कहानी कहते हुये सुन लिया।

सैलानी चुपके मे बोला, 'हजरत अब कभी ऐसी बेवकूफी मत करना। और दोनो गाडी मे जा का बैठ गये।

फिक्स भी एक दूसरे डिब्बे में चढने जा रहा था कि तभी उसके मन मे एक बात आयी। उसने सोचा—'यह ठीक रही। अब मैं कलकत्ता नही जाऊँगा। इन लोगो ने हिन्दुस्तान म आकर जुर्म किया है। इसलिये अब लदन से चाहे वारट आये या न आये। म इन लोगों का यही पकडवा सकता हूँ।'

इसी समय इजन ने सीटी दी, और गाडी चल पडी।

सैलानी और उनका हाथी

जिस डिब्बे में सैलानी और हरफन मौला बैठे थे, उसी डिब्बे में एक और सज्जन यात्रा कर रहे थे। उनका नाम फ्रान्सिस क्रमार्टी था। वे हिन्दुस्तान में किसी फौज में अफसर थे और सैलानी के पूर्व परिचित थे।

ववई से गाडी छूटने के एक घटे बाद पश्चिमी घाट की पहाडियों को पार करती हुई रात के समय नासिक पहुँची। यहाँ से चल कर दूसरे दिन इक्कीस अक्टूवर को साढे बारह बजे बुरहानपुर जा कर रुकी। यहाँ पर हरफन मौला ने एक जोडा वढिया कामदार जूते खरीदे। उन्हें पहन कर वह मन ही मन वहुत खुश हुआ।

यहाँ से सब लोग खा-पी कर नरसिंहपुर के लिये रवाना हुये और सध्या के समय सतपुडा की पहाडियो की सैर करते हुये आगे वढने लगे।

दूसरे दिन बाईस तारीख को जब फ्रान्सिस ने हरफन मौला से समय पूछा तो उसने अपनी घडी देख कर जवाब दिया कि अभी तीन बजे हैं। पर असल मे उसकी घडी चार घंटे सुस्त थी। क्योंकि जिस समय वे लोग इगलैड से चले तो उसने अपनी घडी ग्रीनविच के समय से मिलाई थी। इसलिये यह अब मानी हुई बात थी कि वे लोग ज्यो-ज्यो पूरब की ओर आगे वढते जा रहे थे, हरफन मौला की घडी त्यो-त्यो हरेक दिन सुस्त होती जा रही थी। फ्रासिस ने हरफन मौला की घडी का समय दुरुस्त कर लेने को कहा और उसको समझा दिया कि हरेक देशान्तर पर घडी को दुरुस्त करना

क्यों जरूरी है। समय का लेखा-जोखा लगाने के लिये पृथ्वी के गोले पर बराबर-बराबर की दूरी पर तीन सौ साठ लकीरे बना दी गयी हैं। इन लकीरों को देशान्तर कहते है और उनके बीच के अन्तर को अश या डिगरी के नाम स पुकारते है। इस प्रकार पृथ्वी का सारा गोला तीन सौ साठ अशो मे बँटा हुआ है। हिसाब लगा कर इगलैंड मे ग्रीनविच के समय से ही सब घडियाँ ठीक की जाती हैं। ग्रीनविच इग्लैंड का एक बडा नगर है। यहाँ पर एक घडी रखी हुई है, जिसका समय सूय की चाल स मिला कर हमेशा ठीक कर लिया जाता है। इसलिए इग्लैड के लोग ग्रीनविच के समय को ही ठीक मानते हैं। देखा गया है कि जब कोइ आदमी पूरब की ओर अर्थात सूरज की ओर एक देशान्तर मे दूसर देशान्तर तक जाता है तो उसकी घडी के समय में चार मिनट का अन्तर आ जाता है। वह चार मिनट सुस्त हो जाती है। इसी हिसाब से फ्रासिस ने हरफन मौला की घडी को चार घटे सुस्त बतलाया था। लेकिन हरफन मौला भी एक ही जिद्दी आदमी था। उसने अफसर की बात नही मानी। वह अपनी घडी लदन के समय स ही मिलाये रहा।

दूसरे दिन गाडी सवेरे आठ बजे एक साफ किये हुये घने जगल के बीच मे आकर रुक गयी। चारो ओर बहुत से बगले और मजदूरों के झोपडे बने हुये थे। गार्ड रेलगाडी के पास से होकर चिल्लाता हुआ निकला—

'सब लोग गाडी से उतर जाओ।'

फ्रासिस ने पूछा, 'यह कौन सी जगह है ?'

गाड ने जवाब दिया, मानिकपुर स्टेशन।'

'क्या हमलोगो को यहीं उतरना पडेगा ?'

'हॉ, लाइन अभी अधूरी बनी हे।'

फ्रान्सिस ने पूछा, 'अधूरी वनी है, इसका क्या मतलब ?'

'मानिकपुर और इलाहावाद के बीच अभी लाइन बनना वाकी है। यहाँ से इलाहावाद तक के लिए तुम्हे सवारी का प्रबध करना पडेगा। फिर इलाहाबाद मे तुम्हे दूसरी गाडी मिल जायेगी।'

गार्ड की वात सुन कर सव यात्री अपना सामान-असवाव लेकर गाडी से नीचे उतरे। सैलानी भी फ्रासिस को लेकर सवारी की खोज मे गाँव के भीतर गया। दोनो ने एक सिरे से दूसरे तक सारा गाँव छान मारा किन्तु उन्हे इलाहावाद के लिये कोई सवारी नही मिली। लाचार होकर दोनों स्टेशन पर वापस आये।

सैलानी ने झल्ला कर कहा, 'भाड मे गयी तुम्हारी सवारी, मैं तो पैदल ही जाऊँगा।' पैदल का नाम सुनते ही हरफन मौला ने अपना मुँह बिगाड लिया क्योंकि रास्ते मे पैदल चलने से उसे अपने नये कामदार देशी जूतों के खराव हो जाने का डर था। वह बोला—'मैं एक तरकीब बताऊँ ?'

'क्या ?'

'स्टेशन पर किसी जागीरदार का एक हाथी बॅधा है। शायद यह चलने के लिए तैयार हो जाये।'

सैलानी ने कहा, 'चलो, हम लोग कम से कम उसे देख तो लें।'

पाँच मिनट वाद तीनो के तीनो स्टेशन से निकल कर एक झोपडे के सामने पहुँचे। इस झोपडे के भीतर जागीरदार

साहब एक खटिया पर बैठे चिल्म पी रहे थे। पास में उनका एक नौकर बैठा हुआ था। झोपडे के बाहर एक बाडे में जागीरदार साहब का हाथी बँधा हुआ था। उसको देखते ही सैलानी ने उसको भाडे पर लेने का निश्चय किया।

किन्तु जब सैलानी ने जागीरदार साहब से यह बात कही तो उन्होंने अपने हाथी को किराये पर देने से साफ इन्कार कर दिया। सैलानी ने हर घंटे के लिए एक सौ पचास रुपया भाडा देने को कहा। जागीरदार साहब ने तब भी नाही कर दी। फिर सैलानी ने पचास रुपये बढा कर दो सौ देने को कहा। जागीरदार साहब तब भी राजी नही हुये। सेलानी ने छ: सौ रुपया बोल दिया। जागीरदार साहब तब भी नही कहने पर ही तुले रहे।

जागीरदार साहब की यह भलमनसाहत देख कर सैलानी को ताव आ गया। उसने हाथी को एकदम ही खरीद लेने के इरादे से उसके डेढ हजार दाम लगा दिये। जागीरदार साहब इतने रुपयो मे भी अपना हाथी बेचने को किसी तरह तैयार नही हुये।

तब फ्रान्सिस ने सैलानी को अलग-अकेले मे ले जाकर कहा कि भाई सोच-समझ कर काम करो। इतनी बडी रकम यो ही मत खो दो।'

सैलानी बोला, 'अजी साहब, आप सिर्फ डेढ हजार के लिए रो रहे हैं। यहाँ मेरे तीन लाख रुपयो पर पानी फिर जायेगा। इस हाथी को तो मैं जरूर खरीदूँगा। उसके लिये मुझे चाहे उसकी असली कीमत से दसगुना ही क्यों न देना पडे।'

सैलानी ने तब हाथी के दाम दस हजार रूपये लगाये, फिर पन्द्रह हजार, फिर बीस हजार। इस प्रकार सैलानी दाम बढ़ाता गया और जागीरदार साहब नही-नही करते रहे। अन्त मे दोनों मे तीस हजार की बात पक्की हुई। जागीरदार साहब इतनी रकम मे अपने हाथी को बेचने के लिए राजी हो गये।

हरफन मौला को इस समय जागीरदार साहब के ऊपर बडा ताव आ रहा था। गुस्से से उसका चेहरा लाल हो रहा था। सैलानी को उस हाथी के लिये इतनी बडी रकम देते देख वह बोल पडा, 'मेरे इन जूतों की कसम। हाथी न हुआ, पहाड हुआ।'

हाथी तो मिल गया। लेकिन समस्या थी कि अब उसको हाँकेगा कौन। सैलानी ने तब जागीरदार साहब से कहा कि आप मेहरबानी करके अपने महावत को हम लोगो के साथ कर दीजिये। यदि यह हमको जल्दी इलाहाबाद पहुँचा देगा तो इसे अच्छी खासी रकम इनाम में दी जायेगी। जागीरदार साहब राजी हो गये। और उन्होंने महावत से हाथी के साथ जाने के लिए कह दिया।

बिना किसी देर-दार के व और समय गवाये बिना हाथी यात्रा के लिए तैयार किया गया। महावत ने उस पर झूल डाली और हौदा कसा। फ्रान्सिस्प और सैलानी हौदे के भीतर बैठे। हरफन मौला ने उन दोनों के बीच घुस कर अपना आसन जमाया। महावत हाथी को चलाने के लिये उसकी गर्दन पर बैठा और ठीक नौ बजे सब के सब वहाँ से इलाहाबाद के लिये रवाना हो गये।

□□□

घने जगल मे होकर जाने का नतीजा

हाथी पर बैठे-बैठे सैलानी और फ्रान्सिस की कमर में दर्द होने लगा। जमीन ऊँची-नीची थी, इसलिये उन्हें खूब हचके लग रहे थे। हचकों के मारे हरफन मौला की तो आँते तक हिल गयी। सैलानी ने उससे कह दिया था कि हजरत मुँह से बात मत निकालना, नही तो जीभ सफा कट जायेगी। लेकिन हाथी पर एक जगह सिकुड कर बैठे हुये उसे चैन नहीं पड रहा था। अत में वह उठा और कभी वह हाथी के सिर पर जाकर बैठता और कभी पूँछ के पास। इस उछल-कूद में उसे खूब मजा आ रहा था।

आठ बजे रात को थके-माँदे मुसाफिर विन्ध्याचल की पहाडियों को पार कर के एक घने जगल के पास पहुँचे। यहाँ एक टूटा-फूटा बगला खाली पडा था। सबने उसी के भीतर जाकर अपना डेरा डाला।

उस दिन उन लोगों ने पच्चीस मील की यात्रा की थी। इलाहाबाद अब इतनी ही दूर और रह गया था।

रात मे बडी सर्दी थी। महावत ने आग जलाई। सब लोग उसके चारो ओर बैठ कर व्यालू करने लगे। खा पी कर तैयार हो जाने के बाद फिर सोने की ठहरी। महावत हाथी के पास एक पेड के नीचे सोया। फ्रान्सिस, सैलानी और हरफन मौला ने बगले के भीतर अपने बिस्तर बिछाये। कुछ देर तो वे लोग आपस में गप-शप करते रहे, और फिर शीघ्र ही खुर्राटे लेने लग गये।

सबेरे छः बजे वे लोग वहाँ से फिर चल दिये। दिन को

दो बजे उन लोगों को एक घना जगल मिला। जगल सात मील तक चला गया था। अव तक तो वे लोग वडे मजे स अपनी यात्रा करते आ रहे थे। किन्तु चार वजे के करीव हाथी एक-ब-एक विगड उठा। और वह एक जगह जम कर रह गया। महावत ने बहुत ललकारा, लेकिन हाथी टस-से-मस नहीं हुआ।

फ्रान्सिस ने पूछा, 'क्यो भाई क्या मामला है ?'

महावत बोला, 'हुजूर कह नहीं सकता।'

इतने मे उन्हे जगल के भीतर से शोर-गुल की आवाज सुनायी पडी। महावत हाथी से नीचे उतरा और यह जानने के लिये कि मामला क्या है, वह जगल के भीतर घुसा। थोडी देर मे वापस आकर उसने बताया, 'पास के गाँव मे कोई आदमी मर गया है। लोग उसी को जलाने के लिये ले जा रहे हैं। चलिये, हम लोग रास्ते से एक ओर हो कर जगल के भीतर घुस चलें।'

महावत की बात सुन कर सब लोग हाथी को लेकर झाडियो के पीछे जाकर छिप गये। थोडी देर वाद बहुत से लोग 'राम नाम सत्य है' 'राम नाम सत्य है' चिल्लाते हुये और एक अर्थी लिये हुये उनके सामने से होकर निकले। अर्थी के पीछे बहुत से लोग गाते-बजाते चल रहे थे और साथ एक रूपवती स्त्री रोती हुयी चल रही थी।

फ्रान्सिस उसे देख कर महावत से बोला, 'सती है ?'

महावत ने अपना सिर हिला कर हाँ कर दिया।

सैलानी ने फ्रान्सिस को यह बात कहते हुये सुन लिया और उसने पूछा, 'सती ! सती किसे कहते हैं ?'

फ्रान्सिस ने कहा, 'भाई सैलानी, हिन्दुस्तान मे एक रिवाज है। जब किम्पी स्त्री का पति मर जाता है तो उसकी स्त्री जीते जी पति की जलती हुयी चिता पर बैठ कर उसके साथ ही अपने प्राण दे देती है। इसी को सती होना कहते हैं। जिस स्त्री को अभी तुमने देखा था वह अपने मृत पति के साथ सती होने जा रही है।'

फ्रान्सिस की बात सुन कर सैलानी को उस स्त्री पर बडा तरस आया। वह बोला, 'यह तो बडा बुरा रिवाज है। यदि हम लोग इस स्त्री को बचाने जायें तो ?'

फ्रान्सिस ने कहा, 'ऐम्पी बेवकूफी कभी मत करना। इतना पिटोगे कि पहचाने नही जाओगे।'

सैलानी ने जवाब दिया, 'कुछ भी हो। मैं तो इस स्त्री को अपने सामने मरते हुये नही देख सकता। मैं उसे अवश्य बचाऊँगा। मेरे पास अभी भी बारह घटे फालतू हैं। मैं अपने उस बचे समय को इस काम में लगा देने के लिये खुशी से तैयार हूँ।'

फ्रान्सिस ने उसकी पीठ ठोंक कर कहा, 'तुम तो बडे बहादुर जान पडते हो। उसे बचाओ, इससे बढ कर बात और क्या होगी ?'

काम बडा टेढा था। उसमे सैलानी को जान का खतरा भी था। किन्तु उम्पने हिम्मत नही हारी। फ्रान्सिस उसके साथ था और वह हरफन मौला जो कहो सो करने के लिये तैयार था। लेकिन महावत ? महावत भी उसका साथ देगा या नहीं ? फ्रान्पिस ने उससे यह बात पूछी। वह बोला, 'हजूर, मूझे तो यह ठाकुर की लडकी जान पडती है। और मैं भी

जाति का ठाकुर हूँ। इम्पलिये मैं इस काम मे खुशी से आप लोगो का साथ देने को तैयार हूँ।'

सैलानी वडा खुश हुआ। वह तीनों को लेकर उसी समय उन लोगो के पीछे चल पडा। मरघट यहाँ से वहुत दूर था। चलते-चलते रात को आठ वज गये। वहाँ पहुँच कर गाँव के लोग लकडियाँ वटोर कर चिता बनाने लगे। फ्रान्सिस, सैलानी और महावत इस वात की फिक्र में पडे कि लडकी को किस तरह वचाया जाय।

इधर हरफन मौला अलग ही अपनी धुन मे मस्त था। वह एक पेड के ऊपर वैठा हुआ लडकी को वचाने की तरकीव सोच रहा था। अचानक उसे एक उपाय सूझा। वह मन ही मन बोला, 'विल्कुल पागलपन है। लेकिन किया क्या जाये ? वचाने की वस यही एक तरकीव हो सकती है।'

हरफन मौला ने अपनी तरकीब को अपनी खोपडी से वाहर नही आने दिया। वह चुपचाप पेड पर से नीचे उतरा और अधेरे में जाकर गायव हो गया।

तब तक चिता तैयार हो चुकी थी। लोगों ने लडकी के हाथ पैर बाँध कर उसको चिता के ऊपर डाल दिया। फिर चिता में आग लगा दी गयी। लकडियाँ तेल से भीगी हुई थीं। धू-धू कर के जल उठी।

अचानक सब लोग वडे जोर से चीख उठे और डर के मारे औंधे मुँह जमीन पर गिर पडे। जिस मुर्दे को वे लोग जलाने के लिये लाये थे, वह मरा नही था। क्योंकि सब लोगों ने उसे लकडियों में से वाहर निलकते और उतरते देखा। उस सयम चिता के चारों ओर धुवें का वादल छाया हुआ था,

इसलिये सब लोग उसे भूत समझ कर वहाँ से भाग खडे हुये।

सैलानी और फ्रान्सिस ज्यों के त्यो अपनी जगह पर खडे हुये थे। महावत ने भी डर से अपना सिर झुका लिया था।

मुरदा से जिन्दा हुआ ठाकुर उस स्त्री को लिये हुये उस स्थान पर आया जहाँ सैलानी और फ्रान्सिस खडे थे। वह बोला, 'यहाँ से एकदम चलते बनो।' वह हरफन मौला था। अधेरे में मौका पाकर वही उस औरत को मौत के पजे से छुडा लाया था।—उस औरत को बचाने के लिये वही अपनी जान पर खेल गया था।

बात की बात में तीनों उस औरत को लेकर अपने बगले में आ पहुँचे। और सबेरा होते ही हाथी पर सवार होकर इलाहाबाद के लिये रवाना हो गये।

दस बजे सब लोग स्टेशन पर पहुँचे। सैलानी को पता चला कि वह दूसरे दिन पच्चीस अक्टूबर को ठीक समय पर कलकत्ता पहुँच जायेगा और वहाँ से उसको हाँगकाँग के लिये जहाज मिल जायेगा।

ठाकुर की लडकी का अब भी बुरा हाल था। वह बिल्कुल बेहोश थी। वह अच्छी तो हो ही जायगी, किन्तु फ्रान्सिस को इस बात की चिन्ता थी कि वह अब क्या करेगी, कहाँ जा कर रहेगी ? उसने यह बात सैलानी से भी कही। सैलानी बोला, 'इसकी कोई चिन्ता नही। मैं उसको अपने पास रखूँगा।'

इतने मे कलकत्ता के लिये गाडी छूटने का समय हो

गया। सैलानी ने महावत को उसकी मजदूरी चुकाई और उसके काम से खुश होकर वह हाथी उसको इनाम में द दिया। इसके बाद सब लोग जाकर गाडी में बैठे। गाडी ने सीटी दी और भक-भक करती हुई स्टेशन से चल दी।

दो घटे में गाडी बनारस पहुँची। इस बीच में जगल की ठडी-ठंडी हवा लगने से ठाकुर की लडकी को होश आ गया था। जब उसने अपने को तीन अजनबी आदमियों के साथ रेलगाडी में बैठा पाया तो उसके आश्चय का ठिकाना न रहा। वह भौंचक्की सी होकर अपने चारो ओर देखने लगी। फ्रान्सिस ने तब आदि से अन्त तक उसको बचाने की सारी कहानी सुनायी। फ्रान्सिस की बात सुनते ही लडकी चीख मार कर रो पडी और बोली, 'हाय, आपने यह क्या किया। मुझे अपने स्वामी के साथ क्यों नही जल जाने दिया ? अब तो मैं घर की रही न घाट की। आप ही बताइये, ऐसी हालत में मैं किसके पास जाकर रहूँगी ?'

लडकी की बात सुन कर सैलानी बडे चक्कर में पड गया। मन ही मन सोचने लगा कि यह अच्छी आफत गले पडी। इतने में बनारस आ गया। फ्रान्सिस को यही उतरना था। और कोइ उपाय न देख सैलानी ने लडकी को फ्रान्सिस के सुपुर्द कर दिया। लडकी भी खुशी से काशीधाम मे उतरने के लिए तैयार हो गयी। अब डिब्बे में सैलानी और हरफन मौला रह गये।

दूसरे दिन सवेरे सात बजे गाडी कलकत्ता पहुँची। हाँगकाँग के लिये जहाज बारह बजे छूटने को था। इसलिये सैलानी को सैर-सपाटे के लिये पाँच घटे का समय मिल

गया। उसको अपने हिसाब से पचीस तारीख को—लदन से चलने के तेईस दिन बाद—कलकत्ता पहुँचना था। आज पचीस तारीख थी। इसलिए वह ठीक समय कलकत्ता पहुँच गया। अब तक वह न तो समय की बचत में रहा और न घाटे में। यह ठीक है कि उसने लदन से बबई तक जो दो दिन बचा लिये थे वे खराब गये। किन्तु इसका उसे कोई रज न था।

□□□

नोटो का पुलिन्दा फिर हलका हुआ

गाडी कलकत्ता स्टेशन पर आकर रुकी। सैलानी और हरफन मौला गाडी से नीचे उतरे। सैलानी ने सीधे वदरगाह पर जाना ही ठीक समझा। वह अभी अपना वोरिया-विस्तर सभाल कर स्टेशन से वाहर निकला ही था कि एक सिपाही ने उसके पास आकर कहा, 'क्या आप ही का नाम फिलास फौग उर्फ सैलानी है ?'

'हाँ कहिये क्या वात है ?'

'आप लोग मेहरवानी करके मेरे साथ चलिये। आप दोनों के नाम गिरफ्तारी का वारट है।'

इस बात को सुन कर सैलानी तो जैसे आसमान से गिर पडा। हरफन मौला तो एकदम घवरा गया। उसने समझा कि शायद रधिया के सवधियों ने उनके ऊपर नालिश कर दी है। लेकिन जब वे लोग सिपाही के साथ कचहरी पहुँचे तो वहाँ पर कुछ दूसरा ही मामला नजर आया। हरफन मौला ने वहाँ पर उन पुजारियों को मौजूद पाया जिन्होंने कि ववई के एक मदिर में उसकी मार लगायी थी।

जज साहब ने सैलानी से कहा—'तुम्हारे नौकर पर एक हिन्दू मदिर को अपवित्र करने का अपराध लगाया गया है। सुवूत में अपराधी का वह जूता मौजूद है कि जिसको पहन कर वह मदिर के भीतर घुसा था।' यह कह कर जज साहब ने एक जूता निकाल कर वाहर रखा।

हरफन मौला उसको देखते ही वोल उठा, 'अरे, यह तो मेरा जूता है।'

मालिक और नौकर की अजव हालत हो गयी। दोनों वगलें झाँकने लगे। सैलानी को अव याद आया कि उसके

नौकर ने बंबई में एक हिन्दू मंदिर को अपवित्र किया था और इसी अपराध मे उन दोनों को कचहरी में हाजिर होना पडा है।

असल में यह सब उसी जासूस की करतूत थी। वह सैलानी को हिन्दुस्तान में उस समय तक रोक रखना चाहता था जब तक कि लंदन से उसके नाम का वारंट न आ जाये। इसलिये वह बंबई के पुजारियों के पास गया और उनसे कह-सुन कर सैलानी और हरफन मौला के नाम नालिश करवा दी। वह जानता था कि सैलानी और हरफन मौला कलकत्ता जा रहे हैं। इसलिये वह भी पुजारियों को साथ लेकर उसी दिन कलकत्ता चल पडा। किन्तु जब उसने वहाँ पर सैलानी को मौजूद नहीं पाया तो वह बडा निराश हुआ। असल में सैलानी को रास्ते में उस लडकी को बचाने की झंझट में देर लग गयी थी। नहीं तो वह जासूस से पहले ही कलकत्ता पहुँच जाता। फिक्स ने समझा कि शायद दोनो अपराधी भाग गये हैं। किन्तु उसने तब भी आशा नहीं छोडी। वह बराबर स्टेशन पर जाकर सवारी गाडियों को देखता रहा। अन्त में उसका प्रयत्न सफल हुआ। दूसरे दिन उसने सैलानी और हरफन मौला को गाडी से उतरते पाया। उसने फौरन पुलिस के सिपाही को बुलाया। हरफन मौला और सैलानी के कैद होने और उनके जज साहब के सामने लाये जाने का यही सारा किस्सा है।

जज ने कहा, 'इस अपराध के लिए नौकर को तीन हजार रुपया जुर्माना और पन्द्रह दिन की कैद की सजा दी जाती है। यद्यपि उसके मालिक का इस अपराध मे कोई हाथ नहीं है, किन्तु वह अपने नौकर के हरेक काम के लिये

जिम्मेदार है, इसलिये उसको भी दस दिन की कैद और पन्द्रह हजार रुपया जुर्माना की सजा दी जाती है।'

सैलानी ने कहा, 'हुजूर, हम लोग जमानत देते हैं।'

जज ने कहा, 'अच्छी बात है। लेकिन तुम लोग परदेसी हो। इसलिये तुम्हें दस हजार रुपये से कम की जमानत नहीं लगेगी।'

फिक्स एक कोने में बैठा हुआ कचहरी की सारी कार्यवाही देख रहा था। सजा का हुक्म सुनते ही वह मन ही मन बडा खुश हुआ क्योंकि उसे इस बात की पूरी आशा थी कि यदि ये लोग आठ दिन के लिये भी यहाँ पर रोक लिये गये तो तब तक लदन से गिरफ्तारी का वारट आ जायेगा। किन्तु जब उसने जज को सैलानी की जमानत मजूर करते हुये देखा तो उसके चेहरे का रग उड गया। सैलानी ने अपने थैले से नोटों का पुलिन्दा निकाल कर कहा, 'लीजिए हुजूर, ये हैं दस हजार रुपये।'

सब लोग जमानत पर छोड दिये गये।

सैलानी ने किराये की गाडी की और ग्यारह बजते-बजते सब लोगों के साथ बन्दरगाह पर पहुँच गया। जासूस भी उसके पीछे दौडा। गुस्से से उसका अजब हाल हो रहा था। वह मन ही मन कुडकुडाने लगा, 'बदमाश कहीं का। फिर से निकल कर भागा जा रहा है। पक्का चोर है। तभी तो ऐसा फिजूलखर्च है। लेकिन मैं भी दुनिया के अतिम छोर तक उसका पीछा नहीं छोडूँगा।'

उस समय 'रगून' नाम का जहाज हाँग-काँग जाने के लिये बिल्कुल तैयार खडा था। सब लोग उसमें बैठे और थोडी देर बाद जहाज चल पडा।

फिक्स की अक्ल चक्कर मे

जहाज कलकत्ता से चल दिया। लेकिन चले, हमलोग जरा फिक्स की भी खबर ले लें। वह सैलानी के पीछे हाथ धोकर पडा हुआ था। कलकत्ता छोडते समय वह वहाँ की पुलिस से यह कह आया था कि यदि सैलानी के नाम लदन से गिरफ्तारी का वारंट आये तो वह हाँग-काँग भेज दिया जाये। अब हाँग-काँग के ऊपर ही उसकी सारी आशायें टिकी हुई थीं ? क्योंकि हाँग-काँग पार होते ही सैलानी अंग्रेजी राज्य की सीमा के बाहर हो जायेगा और फिर जासूस उसको कैद नहीं कर सकेगा।

इसलिये फिक्स ने हाँग-काँग की पुलिस को सैलानी के वहाँ आने की खबर दे दी और फिर उसके बाद वह हरफन मौला से बातचीत करने का अवसर खोजने लगा।

उस दिन इकतीस अक्टूबर थी। उसके दूसरे दिन यानी पहली नवम्बर को जहाज हाँग-काँग पहुँचने को था। उस दिन वह अपने कमरे से बाहर निकला और हरफन मौला के पास जाकर, ताज्जुब सा भाव दिखाते हुये बोला, 'अरे, तुम इस जहाज पर कहाँ से ?'

सचमुच फिक्स को देख कर हरफन मौला को बडा ताज्जुब हुआ। वह बोला, 'अजी मिस्टर फिक्स, और तुम यहाँ कहाँ ? मैंने तो तुम्हें बबई मे छोडा था, और अब तुम्हें इस जहाज पर देख रहा हूँ। कहो, क्या तुम भी मेरे मालिक की तरह दुनिया का चक्कर लगाने जा रहे हो ?'

फिक्स ने जवाब दिया, 'नहीं जी, मैं तो सिर्फ हाँग-काँग

तक जा रहा हूँ।

हरफन मौला थोडी सी उलझन में पड कर बोला, 'लेकिन मुझे इस बात का बडा ताज्जुब है कि जब से हमलोग कलकत्ता से चले, मैंने तुम्हें इस जहाज में नहीं देखा।'

फिक्स बोला, 'भाई क्या बताऊँ ? तबियत खराब थी, इसलिये कमरे से बाहर नहीं निकला। कहो, तुम्हारे मालिक का क्या हाल है ?'

'जो पहले था वही अब भी है।'

फिक्स ने कहा, 'अच्छा चलो, आज हम लोग सिंगापुर पहुँच कर बाजार की सैर कर आवें।'

'अच्छी बात है।'

जहाज ठीक समय पर सिंगापुर पहुँचा। वहाँ पहुँच कर जहाज ने कोयला लिया। फिक्स और हरफन मौला तब तक बाजार घूम कर वापस आ गये।

जहाज फिर चल दिया।

सैलानी ने हिसाब लगा कर देखा कि वह पाँच तारीख को हाँग-काँग पहुँच जायेगा। किन्तु रास्ते में तूफान आ गया। जहाज की चाल बहुत धीमी पड गयी। इसलिये सैलानी पाँच तारीख को न पहुँच कर उसके अगले दिन हाँग-काँग पहुँचा। वहाँ पहुँच कर उसने कप्तान से पूछा कि याकोहामा जाने के लिये उसे जहाज कब मिलेगा।

कप्तान ने जवाब दिया, 'कल सवेरे।'

सैलानी ने पूछा, 'जहाज का नाम क्या है ?'

'कैथी।'

'लेकिन वह तो शायद कल ही छूट जाने वाला था।'

'हाँ, किन्तु अभी वह मरम्मत के लिये खडा है। इसलिये उसके जाने में दो दिन की देर हो गयी।'

यह सुन कर कि कैथी दूसरे दिन् सवेरे नौ बजे छूटेगा सैलानी और हरफन मौला ने एक सराय में अपना डेरा डाला।

सध्या के समय सैलानी ने हरफन मौला को जहाज पर अपने लिये पहले से ही जगह तजबीज लेने और याकोहामा के लिए टिकट खरीद लाने के लिये भेजा। जव हरफन मौला टिकट घर पहुँचा तो वहाँ उसने फिक्स को घूमते हुये देखा। उसको देखते ही वह बोला, 'क्यों भाई फिक्स, क्या तुम भी हमारे साथ अमरीका चल रहे हो ?'

जासूस ने अपने दाँत पीस कर कहा, 'हाँ।'

दोनों टिकट घर के भीतर गये। जब टिकट बाबू उन्हे टिकट दे चुका तो उसने उन्हें बताया कि जहाज की मरम्मत हो चुकी है और अव वह कल सबेरे न जाकर आज ही रात को नौ बजे यहाँ से छूट जायेगा।

हरफन मौला बोला, 'अच्छी बात है। मैं अभी जाकर अपने मालिक को खबर देता हूँ।'

अब तो जासूस वडी दुविधा में पड गया। क्योंकि लदन से वारट अभी तक नहीं आया था और इधर हाँगकाँग से जहाज छूटा नहीं कि चोर उसके हाथ से निकल जायेगा। यह सोच कर उसने अब हरफन मौला से सच्चा-सच्चा हाल कह देना ठीक समझा। वह उसको लेकर बाजार गया। वहाँ दोनो एक शराब की दूकान मे पहुँचे। फिक्स बोला, 'आओ भाई हरफन मौला, एकाध बोतल उड जाये। अभी तो जहाज के

छूटने में बहुत देर है। हरफन मौला राजी हो गया। फिक्स ने दो बोतलें मगवाई। हरफन मौला एक बोतल चढा गया। फिर दोनों में गपशप होने लगी। अन्त में फिक्स बोला, 'मुझे तुमसे एक जरूरी बात कहनी है।'

हरफन मौला बोल उठा, 'जरूरी ! भाई जरूरी बाते तो कल भी हो सकती हैं। आज तो मुझको बहुत काम है। मालिक के पास जाकर जहाज छूटने की खबर देनी है। फिर बन्दरगाह पर जाना है।'

फिक्स ने जवाब दिया, 'वह तुम्हारे मालिक की भलाई के लिये ही है। तुम्हें मालूम नही कि मैं लदन की पुलिस का जासूस हूँ।'

'तुम जासूस हो ?'

'हाँ।'

हरफन मौला की बोलती बन्द हो गयी। उसके मुँह से एक शब्द भी नही निकला।

फिक्स बोला, 'सैलानी ने दुनिया का चक्कर लगाने का तो एक बहाना बना रखा है। असल मे वह पुलिस के डर से भागा-भागा फिर रहा है।'

'क्यों ?'

'तुम्हें नहीं मालूम ? अच्छा तो सुनो। 28 सितबर को लदन के बैंक से जो रुपये चोरी गये है, वे इसी ने चुराये हैं।'

हरफन मौला ने मेज पर घूसा मारते हुये कहा, 'सरासर झूठ ? एकदम झूठ ! मेरा मालिक बहुत भला आदमी है।'

'तो क्या उसके साथ तुम भी कैद होना चाहते हो ?'

जासूस की बात सुन कर हरफन मौला बगलें झाँकने

लगा। बोला, 'यह आप क्या कह रहे हैं ?'

फिक्स ने कहा, 'मैंने यहाँ तक सैलानी का पीछा नहीं छोड़ा, लेकिन उसकी गिरफ्तारी के लिये लदन से अभी तक कोई वारंट नही आया। तुम उसे यहाँ पर रोक रखने में मेरी सहायता करो।'

हरफन मौला ने लड़खड़ाती आवाज मे जवाब दिया, 'हरगिज नही। मैं ऐसा काम कभी नहीं करूँगा।'

'अच्छी बात है। मैं तब चला। हमारे-तुम्हारे बीच जो बात हुई है, उसे किसी से न कहना।'

इधर हरफन मौला पर धीरे-धीरे शराब का नशा चढ रहा था। फिक्स ने एक बोतल और मँगवायी। वह उसे भी चढा गया। थोडी देर मे ही वह नशे में चूर हो गया। और बेहोश सा हो कर वहीं गिर पडा।

फिक्स ने हरफन मौला को इस प्रकार लोटते देख कर मन ही मन कहा, 'धत्तेरे की। अब तो सैलानी को आज जहाज छूटने की खबर नहीं मिल पायेगी। और यदि मिल भी गयी तो यह कमबख्त उसक साथ नहीं जा पायेगा।'

यही सोच कर फिक्स ने शराब के दाम चुकाये और वहाँ से चला गया।

सैलानी सेन-फ्रान्सिस्को कैसे पहुँचा ?

इधर हरफन मौला नशे में बेहोश पडा था, उधर सैलानी सराय में रात भर उसके आने की बाट जोहता रहा।

ज्यो-त्यों कर के सवेरा हुआ। हरफन मौला का तब भी कोई पता नहीं। इधर जहाज के छूटने का म्मय हो रहा था, इसलिये वह हरफन मौला के आने की और प्रतीक्षा न कर सीधा बन्दरगाह पर पहुँचा। वहाँ पर उसे पता चला कि जहाज रात में ही चला गया है। यह खूब रही। नौकर भी खो गया और जहाज भी हाथ से निकल गया। वह इसी सोच-विचार में डूबा था कि इतने में एक आदमी उसके पास आया। वह फिक्स था। वह सैलानी से नमम्कार करके बोला,

'क्यों साहब, आप भी तो मेरी तरह रगून जहाज से आये हैं।'

सैलानी ने कहा, 'हाँ, लेकिन मैंने तो आप को नहीं देखा।'

फिक्स बोला, 'माफ कीजिये, मैं आप के नौकर को जानता हूँ। वह कहाँ रह गया है ?'

'उसका तो कल शाम से कोई पता नहीं।'

फिक्स ने ताज्जुब में आकर कहा, 'ऐं, मैं तो समझता था कि वह आपके साथ होगा। लेकिन यह तो बताइये, क्या आप भी जहाज से कहीं जाने वाले थे ?'

'हाँ।'

'अजी साहब क्या बताऊँ उसी जहाज से मुझे भी तो

जाना था। लेकिन मरम्मत पूरी हो जाने की वजह से वह कल ही रात में छूट गया। अब हम लोगो को आठ दिन के बाद दूसरा जहाज मिलेगा।'

सैलानी ने बहुत धीरज से कहा, 'कोई बात नहीं। कैथी को छोड कर बन्दरगाह मे और भी बहुत से जहाज होगें।' यह कह कर वह जहाज की तलाश मे इधर-उधर घूमने लगा। जहाज तो बहुत थे। किन्तु जहाज लेकर उसी समय चलने के लिये कोई भी तैयार नही हुआ। इतने में एक मल्लाह सैलानी के पास आकर बोला, 'क्या आपको कोई पालदार नाव तो नहीं चाहिये ?'

सैलानी ने कहा, 'हाँ, हाँ, क्या तुम्हारे पास कोई नाव है ?'

'जी हाँ, बन्दरगाह भर मे आप को ऐसी नाव नहीं मिलेगी।'

'तो तुम हमको याकोहामा पहुँचा सकोगे ?'

'आप भी हॅसी कर रहे हैं। याकोहामा यहाॅ से एक हजार छः सौ मील दूर है।'

'नही मैं हँसी नही कर रहा हूँ। मै कल कैथी जहाज से नही जा पाया। और अब मुझे चौदह तारीख को याकोहामा पहुँचना बहुत जरूरी है।'

'याकोहामा से आप कहाॅ जायेंगे ?'

'वहाँ से मुझे सेन-फ्रान्सिस्को जाना है।'

'अरे, तब आप एक काम क्यों नहीं करते ? यहाॅ से शघाई चलिये। वहाँ से आपको याकोहामा के लिये जहाज मिल जायेगा। फिर याकोहामा से आप सेन-फ्रान्सिस्को चले

जाइयेगा।'

सैलानी ने पूछा, 'शघाई से जहाज कब छूटता है ?'

'ग्यारह तारीख को शाम को सात बजे छूटेगा।'

'तब फिर तुम कब चल सकते हो ?'

'इसी समय।'

'अच्छी बात है। क्या तुम्हें पेशगी चाहिये ?'

'जैसा आप ठीक समझें।'

'लो, ये तीन हजार रुपये हैं।' फिर उसने फिक्स की ओर घूम कर कहा, 'यदि आप चाहें तो आप भी मेरे साथ चल सकते हैं।'

'बडी अच्छी बात है। मैं आपसे इसके लिए कहने ही वाला था।'

तीन बजे नाव तैयार हुइ और सवा तीन बजे सब लोग वहाँ से चल दिये।

ग्यारह तारीख को नाव ठीक समय पर शघाई पहुँच गयी और वहाँ से सैलानी को सेन-फ्रान्सिस्को के लिये जहाज मिल गया।

□□□

हरफन मौला नक्कू सरकस मे

कैथी जहाज सात नववर को शाम साढे छ बजे हाँग-काँग से रवाना हो गया था।

दूसरे दिन सवेरे मल्लाहो ने एक अजीव सूरत के आदमी को जहाज की एक कोठरी से वाहर निकलते हुये देखा। वह नगे पॉव, नगे सिर था। उसके बाल विखरे हुये थे। आँखे चढी थीं। पैर लडखडा रहे थे। कोठरी से वाहर निकल कर वह जहाज के ऊपर की छत पर जा बैठा। यह हरफन मौला था। उसके ऊपर जो कुछ बीती वह इस प्रकार है।

फिक्स के चले जाने के बाद दूकान वाले ने हरफन मौला को उठा कर एक चारपाई पर डाल दिया। पूरे तीन घंटे बाद उसकी आँख खुली तो वह घबरा कर उठ बैठा। मालिक के काम की बात याद आते ही उसका नशा उतर गया। वह दूकान से बाहर निकला और 'कैथी' चिल्लाता हुआ सीधे वन्दरगाह की तरफ भागा।

उस समय जहाज बस छूटने ही वाला था। चल पडने के लिए भोंपू बजा रहा था। नशे की खुमारी मे गिरता-पडता हरफन मौला जहाज पर चढ गया और और जहाज की छत के ऊपर जाते-जाते बेहोश हो कर गिर पडा। मल्लाहो को उसकी दशा पर वडा तरस आया। उन्होने उसको उठा कर एक कोठरी में डाल दिया और दूसरे दिन जब उसकी ऑख खुली तो वह हॉग-कॉग से पन्द्रह मील दूर निकल गया था।

समुद्र की ठण्डी-ठण्डी ताजी-ताजी हवा लगने से धीरे-धीरे उसके होश-हवास बिल्कुल दुरुस्त हो गये। उसे

बीते दिन की सारी घटनायें याद आ गईं। तब वह जहाज के एक कोने से दूसरे कोने तक अपने मालिक को खोजता हुआ फिरने लगा। किन्तु सैलानी का कोई पता न चला। अन्त मे उसकी खोपडी के भीतर एक बात कौंधी। वह दौड कर जहाज के कप्तान के पास गया और बोला—क्यों साहब, इस जहाज का नाम क्या है।'

'कैथी।'

'याकोहामा जा रहा है न ?'

'हाँ, वही जा रहा है।'

हरफन मौला असल मे इस बात के झमेले में पड गया था कि वह भूल से किसी और जहाज पर चढ गया है। लेकिन जब उसे मालूम हो गया कि इस जहाज का नाम कैथी ही है तो अब उसे इम्स बात का पूरा विश्वास हो गया कि उसका मालिक उस्स जहाज मे नहीं है।

अब तो हरफन मौला के ऊपर जैसे बिजली गिर पडी। अचानक उसकी आँखें खुली। अब उसे याद पडा कि कैथी के छूटने का समय बदल गया था और यह बात उसे मालिक से जा कर कहनी चाहिये थी। मगर उसने ऐसा नही किया। यह उसका ही कुसूर था। फिक्स ने उसके साथ जो चाल चली थी, उसको याद करके वह अपने ऊपर मन ही मन झल्लाया।

लेकिन अब हरफन मौला को अपनी फिक्र पडी। वह जापान जा कर क्या करेगा ? कहाँ रहेगा ? क्या खायेगा ? उसकी जेब बिल्कुल खाली थी। पल्ले में एक पैसा भी नही था—एक फूटी कौडी भी नहीं थी।

तेरह तारीख को जहाज याकोहामा पहुँचा। वहाँ पहुँच

कर हरफन मौला जाकर एक सरकस मे भरती हो गया। इम्म सरकस का नाम था 'नक्कू सरकस'। उन दिनो यह सरकस दूर-दूर तक मशहूर था। उसमें बडे अजीव-अजीब खेल दिखाये जाते। मगर इस सरकस मे खेल दिखाने वालों की एक खास बात यह थी कि उन सब की नाकें वडी लम्बी होती थीं। इसलिये यह नक्कू सरकस के नाम मे प्रसिद्ध था। लेकिन इससे कहीं तुम यह मत समझ लेना कि उन लोगों ने खुदा के घर मे लबी नाकें पायी थीं। असल मे उन सब की नाकें वनावटी होती थीं। उनसे आठ-आठ, दस-दस फिट लम्बे बाँस बँधे होते थे। कोई टेढा, कोई तिरछा, कोइ कँटीला, कोई चिकना। अपनी नाकों से बँधे हुये इन बाँसो के ऊपर ही वे लोग सरकस के खेल दिखाया करते थे।

सरकस के मालिक ने हरफन मौला को भी ये खेल सिखलाये और वह थोडे दिनो मे ही इन खेलो को जान ही नही गया पक्का उस्ताद बन गया। तव मालिक ने एक दिन लोगों को उसका खेल दिखलाने का प्रबन्ध किया। म्मब लोग इकट्ठा हुये।हरफन मौला भी रग-बिरगे कपडे पहने और छ फीट लम्बी नाक लगाये अखाडे में आ धमका। तव उसके साथियों मे से हरेक ने एक-एक करके उसकी नाक क ऊपर चढना शुरू किया। पहले एक आदमी चढा। फिर उम्मकी नाक के ऊपर दूसरा चढा, फिर दूसरे के ऊपर तीम्मरा चढा। यहाँ तक कि नाको पर चढे इन आदमियो का ताजिया सरकस के ऊँचे तम्बू की छत से जा लगा।

देखने वालो ने ऐसी तालियाँ पीटीं कि कान फटने लगे। लेकिन हाय ! यह क्या हुआ ? अचानक ताजिया डगमगाया

और बिखर कर धडाम से नीचे गिर पडा। असल में यह हरफन मौला का कुसूर था। उसे न जाने क्या सूझी कि वह अपनी जगह छोड कर तमाशबीनो की तरफ दौडा और एक तमाशबीन के सामने जाकर 'हाय मेरे मालिक, हाय मेरे मालिक' चिल्लाता हुआ उसके पैरों पर गिर पडा।

'हरफन मौला तुम यहाँ कैसे ?'

'किस्मत घसीट लायी मालिक।'

'यह बात है तो फिर यहाँ से फौरन खिसक चलो।'

सैलानी और हरफन मौला वहाँ से सरपट भाग, और लोग चिल्लाते ही रहे—अरे पकडो ! पकडो भागा जा रहा है।'

तब तक वे भाग कर ठीक समय पर बन्दरगाह पर आ गये और जहाज पर बैठ कर सेन-फ्रान्सिस्को के लिये रवाना हो गये।

□□□

जासूस से फिर भेट हुई

असल में सारा किस्सा यों हुआ कि जब सैलानी चौदह नवबर के सवेरे याकोहामा पहुँचा तो उसे पता चला कि सेन-फ्रान्सिस्को जाने वाला जहाज सध्या क समय छूटेगा। तब तक उसने बाजार घूम आना ठीक समझा। घूमते-घूमते वह सरकस की जगह पहुँच गया। वहाँ लोगों के मुँह से सरकस वालों की तारीफ सुन कर वह भी खेल देखने की नियत से भीतर चला गया। उस समय हरफन मौला अपनी छ फिट लम्बी नाक के ऊपर छ आदमियों का बोझ सम्हाले खडा था। सैलानी उसको नहीं पहचान पाया, लेकिन हरफन मौला ने सैलानी को पहचान लिया। सैलानी को ऐसे बेमौके वहाँ मौजूद देख वह एकदम से चौंक पडा। उसके जरा सा ही इधर-उधर होने से उसकी नाक हिल गयी और सारा ताजिया धडाम से नीचे गिर पडा।

वहाँ से भाग आकर हरफन मौला ने सारी रामकहानी मालिक से कह सुनायी। मगर उसने फिक्स का नाम नहीं लिया। सारा अपराध अपने ऊपर ही ले लिया। जिस जहाज पर वे लाग याकोहामा से सवार हुये उसका नाम 'जनरल ग्रान्ट' था। याकोहामा छोडने के नौ दिन बाद सैलानी ठीक आधी दुनिया का चक्कर लगा चुका था। इतनी दूर की यात्रा में उसको बावन दिन लग गये। अब उसके पास अस्सी दिन मे सिर्फ अठाइस दिन बाकी बचे थे। लेकिन रास्ता अब बिल्कुल सीधा था। और अब फिक्स भी उसके रास्ते मे रोडा अटकाने के लिए वहाँ मौजूद नहीं था।

लेकिन फिक्स आखिर था कहाँ ?

असल मे फिक्स भी उसी जहाज में मौजूद था जिसमें सेलानी और हरफन मौला वैठे थे। याकोहामा पहुँचने पर फिक्स सीधे पुलिस के दफ्तर में गया। वहीं उसे सैलानी की गिरफ्तारी के लिए लदन से आया हुआ वारट मिल गया। लेकिन जव फिक्स ने देखा कि अब वारट किसी काम का नही रहा तो उसे बडी निराशा हुई। वह मन ही मन सैलानी के ऊपर झल्ला उठा। फिर जब उसका गुस्सा कुछ शात हुआ तो वह वोला, 'खर कोई वात नही। यदि वारट यहाँ पर काम मे नही लाया जा सकता तो फिर इग्लैण्ड पहुँच कर ही देखा जायेगा।'

यह सोच कर उसने सैलानी के साथ-साथ इग्लैड तक यात्रा करने का निश्चय किया। लेकिन वहाँ पर हरफन मौला को भी मौजूद देख कर उसके आश्चर्य का ठिकाना न रहा। क्योकि उसको तो वह हॉगकॉग मे शराव की दूकान में वेहोश पडा छोड आया था। उसकी नजरो से वचने के लिये अपने कमरे मे जा कर छिप कर वेठ गया। लेकिन दैवयोग से जव वह बाद में अपने कमरे से निकला तो उसकी भेट अचानक हरफन मौला से हो गयी।

हरफन मौला ने विना कुछ कहे-सुने जासूस फिक्स का गला पकड लिया ओर लात-घूसो से उसकी पिटाइ शुरू कर दी। जब उसे वह खूब जी भर कर पीट चुका तो फिक्स उठा और वडे धीरज के साथ वोला,

'क्यो भाई, तवियत भर गयी न ?'

'हाँ, फिलहाल।'

'तो फिर अब एक बात मेरी भी सुन लो।'

'लेकिन——————।'

'यह बात तुम्हारे मालिक की भलाई के लिए ही है।'

हरफन मौला जासूस फिक्स की बाता मे आ गया। फिर वहीं छत पर बैठ कर उसकी बाते सुनने लगा। जासूस बोला, 'तुमने मुझे अच्छी तरह से खूब पीट लिया है। मैं इसे पहले से ही जानता था। अब सुनो, अब तक तो मैं तुम्हारे मालिक के खिलाफ था, लेकिन अब उसकी तरफ से हूँ।'

हरफन मौला बोल उठा, 'आखिर वही बात निकली न। अब तो तुम्हें मालूम हो गया न कि मेरा मालिक ईमानदार है।'

फिक्स बोला, 'नही जी, मैं उसे अब भी पक्का चोर समझता हूँ। बात असल मे यह है कि जब तक वह अग्रेजी राज में यात्रा कर रहा था, तब तक तो मैं लदन से वारट आने तक उसको रोक रखने की फिक्र में था। लेकिन सैलानी इग्लैंड जा रहा है, इसलिये मैं चाहता हूँ कि वह जितनी जल्दी हो सके उतनी जल्दी इग्लैड पहुँच जाये। जो तुम चाहते हो, वही मैं भी चाहता हूँ। क्योकि इग्लड पहुँचन पर ही तुमको यह बात मालूम हो सकेगी कि तुम चोर की नौकरी कर रहे हो या किसी भले आदमी की।'

हरफन मौला ने बडे ध्यान से उसकी बाते सुनी और उसे ऐसा मालूम हुआ कि जो कुछ वह कह रहा है बिल्कुल सच कह रहा है।

फिक्स न कहा, 'तो फिर हमारी तुम्हारी दोस्ती रही न।'

हरफन मौला बोला, 'दोस्ती ! ऐसा तो हरगिज नहीं हो सकता। मैं तुम्हारा साथ देने के लिये भले तैयार हूँ। लेकिन इतना याद रखना कि तुमने अगर मेरे साथ जरा भी चालबाजी की तो तुम्हारी तबियत मैं हरी कर दूँगा।'

फिक्स बोला, 'मजूर है।'

ग्यारह दिन बाद दिसम्बर की तीसरी तारीख को व लोग सेन-फ्रान्सिस्को पहुँचे। जहाज से उतरते ही सैलानी को सब से पहले इस बात का पता लगाने की फिक्र हुइ कि न्यूयार्क की गाडी कितने बजे रवाना होती है। गाडी छ बजे शाम को छूटती थी। सारा दिन घूमने को पडा हुआ था। थोडा सा नाश्ता-पानी करके वह मटरगस्ती के लिये चल पडा।

सैलानी जब घूम रहा था तो उसे रास्ते में अचानक फिक्स मिल गया। सैलानी को देखते ही उसने कहा, 'ऐ, हम और आप साथ-साथ एक ही जहाज मे आये, लेकिन रास्ते में एक दिन भी भेंट नही हुई।'

फिर कुछ देर तक इधर-उधर की बातें करने के बाद फिक्स ने कहा कि वह भी अपने एक काम से यूरोप जा रहा है और सैलानी के साथ यात्रा करने मे उसे बडी खुशी होगी।

सैलानी भी उसको बडी प्रसन्नता के साथ अपने सग ले चलने के लिये तैयार हो गया।

इसके बाद दोनो पौने छ बजे स्टेशन लौटे। वहाँ उनको ठीक समय पर गाडी मिल गया।

सैलानी के धैर्य की परीक्षा

सैलानी को सात दिन मे न्यूयार्क पहुँच जाने की पूरी आशा थी। वहाँ उसे ग्यारह तारीख को लिवरपूल के लिये जहाज मिल जाता। किन्तु सेनफ्रान्सिस्को से चलते ही रास्ते मे रेलगाडी पर डाका पडा। इस गडबडी मे उसके पूरे बीस घटे मारे गये। जिस स्टेशन के पास वह डाका पडा था वहाँ से शाम से पहले और कोई गाडी नही जाती थी। फिक्स ने सैलानी के पास जाकर कहा, 'क्यो साहब, क्या आप को सचमुच ही ग्यारह तारीख को सध्या के समय जहाज छूटने के पहले न्यूयार्क पहुँचना है ?'

सैलानी ने उत्तर दिया, 'हाँ, साहब, बात तो ऐसी ही है।'

'यदि रास्ते में डाका नही पडता तो आप शायद ग्यारह तारीख को बडे तडके ही न्यूयार्क पहुँच जाते।'

सैलानी ने कहा, 'हाँ और घूमने-घामने के लिये बारह घटे का अवसर मिल जाता।'

'यह तो बडा बुरा हुआ। यहाँ आप के बीस घटे मारे गये। बीस में से बारह गये, बाकी बचे आठ। यानी आप को किसी तरह अपने आठ घंटे पूरे करने हैं।'

'हॉ।'

'क्या आपने इसके लिये कोई तरकीब सोची है ?'

'तरकिब क्या सोची है ! पैदल जाऊँगा।'

'नही जी, मैं आपको एक तरकीब बताऊँ ? यहाँ से ओमाहा जकशन के लिये एक पालदार नाव किराये पर

लीजिये। ओमाहा यहाँ स दो सौ मील्न है। हम लोग पाँच-छ घटे मे ओमाहा पहुँच जायेंगे। वहाँ से न्यूयार्क और शिकागो के लिये वहुत सी गाडियाँ मिल जायेंगी। हम लोग चाहे जिसमे अपनी यात्रा कर सकते हैं।'
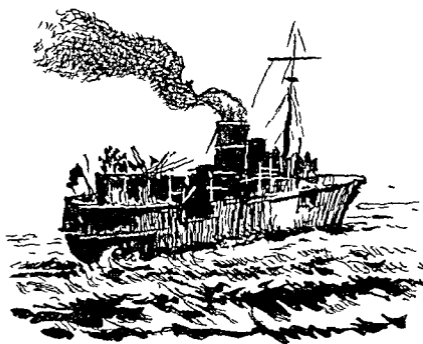
फिक्स की वात सुन कर मेलानी वहुत खुश हुआ। उसने फौरन ही नदी के घाट पर जा कर एक नाव किराये पर की और आठ बजते-बजते सब लोग उस पर बैठ कर ओमाहा के लिये रवाना हो गये।

नाव एक बजे ओमाहा पहुँची। उम्स समय एक डाक गाडी शिकागो जान के लिए विल्कुल तैयार खडी थी। म्सब लोग टिकट लेकर उस पर सवार हुये और दूसरे दिन दम्स तारीख को शिकागो पहुँचे। शिकागो में न्यूयार्क के लिए ढेरों गाडियाँ

जाती थी। सैलानी ने गाडी बदली और पिट्सबर्ग-शिकागो रेलवे का इजिन भक-भक करता हुआ न्यूयार्क के लिये रवाना हो गया। ग्यारह दिसम्बर को रात को सवा ग्यारह बजे गाडी न्यूयार्क स्टेशन पर आकर रुकी। लिवरपूल जाने वाला जहाज उससे पौन घटे पहले ही छूट गया था।

सैलानी ने माथा पीट लिया। जहाज मिलने मे सिर्फ पैंतालिस मिनट का फेर पड गया। लेकिन इस बात से वह तनिक भी नही घबराया। बडे धीरज के साथ बोला, 'कोई हर्ज नही, कल देखा जायगा।'

दूसरे दिन बारह दिसम्बर था। न्यूयार्क से लदन के लिए नौ दिन का रास्ता है। इसलिये अगर सैलानी को उस दिन जहाज मिल जाता तो वह इक्कीस्म दिसम्बर को ठीक समय पर लदन पहुँच जाता।

थोडा सा जलपान करने के बाद वह किसी दूसरे जहाज की तलाश मे बाहर निकला। जहाज मिलने की उसे बिल्कुल आशा नही थी। उसकी तबियत बिल्कुल गिर गयी थी। इतने में उसे किनारे से कुछ दूर पर एक जहाज दिखायी पडा। सैलानी एक नाव पर सवार हो उस जहाज के पास पहुँचा। जहाज का कप्तान छत के ऊपर घूम रहा था। उसके पास जाकर सैलानी ने पूछा, 'क्या आप हम तीन आदमियो को लिवरपूल पहुँचा सकते हैं।'

'लिवरपूल ? नही जनाव। मेरा जहाज बोर्डो के लिए किराये पर लिया गया है।'

सैलानी ने पूछा, 'क्या आप लिवरपूल किसी तरह भी नहीं चल सकते ?'

किसी तरह भी नही।

म लिवरपूल चलने के लिए पूरे जहाज का किराया दन रा भी तैयार हूँ।'

नही।'

जहाज खरीदने के लिये भी तैयार हूँ।'

'नहीं जनाव।'

सैलानी वडे चक्कर में पडा। क्योंकि अव तक रुपयों की वजह से उसके मार्ग की सव कठिनाइयाँ दूर होती आयी थीं। किन्तु आज रुपयों से भी कुछ काम चलता नहीं दिखाई पडता। अचानक उसके मन में एक वात आयी। उसने कप्तान से कहा—

अच्छा आप मुझे वोर्डो ही ले चलिये।'

'नही साहब ' असम्भव है।'

'आप जितने भी रुपये कहिये, मैं अभी देने को तैयार हूँ। बस किसी तरह मुझे ले चलिये।'

'नही, आप चाहे मुझे पाँच सौ रुपये ही क्यो न दे, पर मैं नही ले चल सकता। क्योंकि यह पूरा जहाज किसी दूसरे ने ले रखा है।'

'मैं तुम्हें पाँच हजार रुपये दूँगा।'

'पाँच हजार ?'

'हाँ, जितना और भी कहोगे दूँगा।'

तब कुछ सोच कर दो मिनट के वाद कप्तान ने पूछा, 'क्या हरेक आदमी के लिये पाँच-पाँच हजार ?'

'हाँ, हरेक आदमी के लिये।'

सुन कर कप्तान अपना सिर खुजलाने लगा। वह सोचने

लगा, बैठे ठाले इतने रुपये मिल रहे हैं। सोच-सोच कर, उसने कहा—'अच्छी बात है। आप सब लोग ठीक नौ बजे चलने के लिये तैयार हो कर आ जाइये।'

मैलानी ने घडी देखी। उस समय साढे आठ बजे थे। नौ बजते-बजते मैलानी, फिक्स और हरफन मौला जहाज पर जा पहुँचे। और ठीक समय से जहाज छूट गया।

□□□

सैलानी कैद मे

दूसरे दिन दिसम्बर की तेरह तारीख थी।

दोपहर का समय था। इतने में एक आदमी जहाज की छत पर आया। और इस बात की पूछ-ताछ करने लगा कि जहाज किधर को जा रहा है। चाल-ढाल से यह आदमी जहाज का कोई अधिकारी जान पडता था। लेकिन वह और कोई नहीं, सैलानी था।

जहाज के असली कप्तान तो बडी हिफाजत के साथ ताले-चाभी के अन्दर अपनी कोठरी मे बन्द थे। उनके बुडबुडाने और बडबडाने से जान पडता था कि इस समय वे खूब गुस्से में भरे बैठे हैं।

उनके ऊपर जो कुछ बीती, इस प्रकार थी—

सैलानी को लिवरपूल जाना था। लेकिन कप्तान साहब ने लिवरपूल जाने से एकदम इन्कार कर दिया। तब सैलानी बोर्डो चलने के लिये तैयार हो गया। जब जहाज खुले समुद्र में आया तो उसने मल्लाहों को घूस देकर अपने हाथ में कर लिया। रुपयों के लोभ मे पड कर मल्लाहो ने कप्तान साहब को धता बता दिया। वे सब लोग सैलानी के कहे मे हो गये। यही कारण था कि बेचारा कप्तान अपनी कोठरी के अन्दर कैद था और जहाज बार्डो की ओर जाने के बजाय लिवरपूल जा रहा था। सैलानी जहाज का कप्तान बन कर सब को निर्देश दे रहा था। और अपने मन से जहाज को चला रहा था।

सोलह दिसम्बर को सैलानी को लदन छोडे पूरे

पचहत्तर दिन हो गये थे। उस दिन एक मल्लाह ने उसके पास आ कर कहा कि जहाज का ईंधन चुक गया है।

सोच कर सैलानी ने कहा, 'जब तक ईंधन है, तब तक खूब तेजी के साथ चलो।'

जहाज अपनी पूरी रफ्तार से चल रहा था। लेकिन उसके दो दिन बाद अठारह दिसम्बर को सैलानी को मालूम हुआ कि अब दूसरे दिन के लिये बिलकुल कोयला नहीं है।

सैलानी ने कहा, 'ईंधन को किसी तरह भी मत बुझने दो।'

उसी दिन दोपहर के समय सैलानी ने जहाज के कप्तान को छोड देना ठीक समझा। कोठरी खोल दी गयी और कुछ ही देर बाद एक बम का गोला जहाज की छत के ऊपर आया। वह बम का गोला खुद कप्तान साहब थे। गुस्से मे बिल्कुल फट पडने के लिय तैयार थे। छत पर आते ही बोले, 'हम लोग किधर जा रहे हैं ?'

सैलानी ने बडे धीरज के साथ कहा, 'लिवरपूल को।'

कप्तान ने गरज कर कहा, 'बदमाश कही का।'

'महाशय जी, मैंने आपको इसलिये बुलाया है कि——'

कप्तान ने क्रोध मे भर कर कहा, 'डाकू कही का।'

सैलानी अपने उसी ढग से कहता गया, 'मैं आप का जहाज मोल लेना चाहता हूँ।'

'नही, हरगिज नहीं।'

'खैर, लेकिन आज मैं उसमे आग लगा रहा हूँ।'

'मेरे जहाज को आग ?'

'हाँ, कम से कम उसके मस्तूल वगैरह तो जलाने ही पडेंगे। क्योंकि जहाज मे ईंधन चुक गया है।'

कप्तान ने गुस्से मे लाल होकर कहा, 'मेरे जहाज में आग ? डेढ लाख रुपये का जहाज है।'

मेलानी ने अपनी जेब मे नोटो का बडल निकाल कर कहा, 'मं पौने दो लाख रुपये दूँगा।'

यह वात सुनते ही कप्तान का सारा क्रोध बात की वात मे छूमतर हो गया। नोटो का बडल लेकर उन्होने मल्लाहा से कहा—'देखो जी, इनको बहुत जल्दी लिवरपूल पहुँचना है, इसलिए जहाज मे जितनी लकडी लगी हो, वह सव निकाल कर इजिन मे झोक दो।'

पहले दिन जहाज की छत तोड कर जलायी गयी। दूसरे दिन मस्तूलो और कोठरियो का नवर आया। तीसरे दिन वीस तारीख को पालो का स्वाहा हुआ। सब लोगो ने वडी खुशी से इस काम को किया।

रात को एक वजे जहाज क्वीन्सटाउन के वन्दरगाह पर पहुँचा। वहाँ पर तीनो साथी जहाज पर से उतरे और रेलगाडी मे सवार हुये। सवेरा होते-होते सब लोग डवलिन पहुँचे। यहाँ से फिर जहाज पर सवार होकर लिवरपूल के लिये रवाना हुय। 21 दिसम्बर की दोपहर को बारह बजने मे वीस मिनट पर जहाज लिवरपूल पहुँचा और सब लोग इगलैण्ड के किनारे पर जाकर उतरे।

लदन वहाँ से अव केवल छ घटे का रास्ता था। किन्तु उसी समय फिक्स उनके पास पहुँचा और मैलानी को वारट दिखा कर बोला, 'क्या आप ही का नाम फिलास फौन उर्फ मैलानी है ?'

'जी हाँ, साहव !'

'तो मैं आप को महारानी के नाम पर कैद करता हूँ।'

सैलानी की निराशा

सैलानी पुलिस के हवाले कर दिया गया। लदन जाने के पहले वह रात भर पुलिस की चोकी के अन्दर बन्द रहा।

हरफन मौला की हैरानी का ठिकाना नही था। मालिक की इस कैद से बना-बनाया खेल मिट्टी मे मिला जा रहा था। सैलानी ने भी समझ लिया कि अब सब चौपट हो गया। लेकिन उसने अपने धीरज को तिल भर भी नही हिलने दिया। उनके चेहरे पर न तो किसी तरह की घबराहट थी और न क्रोध।

चौकी की घडी में टन के साथ एक बजा। सेलानी ने अपनी घडी देखी। वह चौकी की घडी से दो मिनट तेज थी।

धीरे-धीरे दो भी बज गये। यदि उस समय भी सैलानी को लदन जाने के लिये डाक गाडी मिल जाती तो वह ठीक समय पर अपने क्लब मे पहुँच जाता।

दो बज कर पैंतीस मिनट पर उसने बाहर किसी के आने की आहट सुनी। चौकी का दरवाजा खुला और उसन हरफन मौला ओर फिक्स को भीतर घुसते देखा।

फिक्स ने लडखडाते हुए कहा, 'महाशय, महाशय, क्षमा कीजिए, बडा धोखा हो गया—आप का ओर चोर का हुलिया बिल्कुल एक था—असली चोर आज से तीन दिन पहले पकड लिया गया है। आप छोड दिये गये है।'

सैलानी छोड दिया गया और छूटते ही उसने जासूस क कधे पर एक ऐसा घूँसा जमाया कि वह आधे मुँह जमीन पर गिर पडा।

गिरते समय फिक्स ने कोई चूँ-चपाट नही की। वह था भी इसी लायक। सैलानी और हरफन मौला चौकी से निकल कर बाहर हुये और घोडा गाडी पर बैठ कर स्टेशन पहुँचे। यहाँ पर पूछने से मालूम हुआ कि लदन जाने वाली उनकी गाडी अभी-अभी छूट गयी है। तव सैलानी ने एक स्पेशल ट्रेन तैयार करवायी। ड्राइवर को इनाम देने का वायदा कर के वे लोग तीन बजे लदन के लिये रवाना हुये। लिवरपूल और लदन के बीच का रास्ता तय करने के लिये उनके पास सिर्फ पाँच घंटे थे। लाइन साफ होने पर तो साढे पाच घटे में लदन पहुँच जाना कोई मुश्किल बात नही थी। लेकिन रास्ते मे उन्हें कई जगह रुकना पडा। इसलिये जव गाडी लदन के स्टेशन पर पहुँची तो घडी में आठ बज कर पचास मिनट हो गये थे।

दुनिया का पूरा चक्कर लगा आने के बाद लदन पहुँचने में बेचारे सैलानी को सिर्फ पाँच मिनट की देर हो गयी।

लेकिन सैलानी को इस बात का तनिक भी रज नही हुआ। वह सीधा अपने घर गया। फिर रात भर पडा सोता रहा।

दूसरे दिन सध्या समय सैलानी ने हरफन मौला को बुला कर कहा, 'भाई हरफन मौला, आज का दिन तो किसी तरह कट गया लेकिन अव कल की फिक्र करनी चाहिये। मेरी गाँठ में अब एक पैसा भी नहीं बचा है। यहाँ पर मेरे एक मित्र हैं। उनके नाम से लदन की बैंक में मेरा कुछ रुपया जमा है। यह लो, मैंने उनके लिये एक चिट्ठी लिख दी है। चिट्ठी के ऊपर उनका पता लिखा है। उनसे कहना कि मेहरबानी कर के कल ही बैंक से रुपया ला कर मेरे पास

भिजवा दं।'

उस समय आठ वजन में पाँच मिनट वाकी थ।

हरफन मौला चिटठी लेकर उसी समय मैलाना क ि के घर चल दिया।

□□□

सैलानी बाजी जीत गया

17 दिसम्बर को जेम्स नाम का एक आदमी बक की चोरी के मामले मे पकडा गया। किन्तु उसके तीन दिन पहले फिलास फौग उर्फ सेलानी के पकडे जाने की खबर थी। उस समय वह दुनिया का चक्कर लगाने की धुन में लगा था।

जब सैलानी के मित्रों ने असली चोर के पकडे जाने की खबर सुनी तो वे लोग उसके आने की बाट जोहने लगे। क्लब में बैठ कर रोज उसी की चर्चा करते। सैलानी कब लौटेगा। 17 दिसम्बर को वह कहाँ होगा ? क्या वह 21 दिसम्बर को आठ बज कर पैतालिस मिनट पर उनको दिखलायी पड जायेगा ?

उस दिन भी शाम को सैलानी के सब मित्र क्लब मे बैठ कर इसी प्रकार की बातचीत कर रहे थे। जिस समय घडी ने ठीक आठ बज कर पच्चीस मिनट बजाये तो एन्ड्रयू ने आकर कहा,

'भाइयों, हमारे ओर सैलानी के बीच जो समय ठहरा था वह बीस मिनट में पूरा हो जायेगा। न्यूयार्क से आने वाला जहाज कल लदन आ गया है। उसे कल ही यहॉ पर आ जाना चाहिये था।'

इतने में घडी मे आठ बज कर चालीस मिनट हुये। एन्ड्रयू ने कहा, 'बस पाँच मिनट और हैं।' यह कह कर वह अपने साथियो के सग ताश खेलने के लिये बैठ गया। लेकिन उस समय ताश खेलने म किसी का जी नही लग रहा था।

सव की आँख घडी की ओर लगी हुई थी।

टामस ने राल्फ के हाथ के पत्ते काट कर कहा, 'आठ वज कर तैंजालिस मिनट।'

जोन ने कहा, 'आठ वज कर चवालीस मिनट।'

मिनट भर की देर और थी और वे लोग वाजी जीत जाते। लेकिन एन्ड्रयू और उसके साथी इतना अकुला रहे थे कि उन्होने सेकेन्ड का गिनना भी शुरु कर दिया।

चालीस सेंकेड हो गये। तव भी कोइ नहीं आया।

पचासवें सेकंड पर भी कोई आता नजर नहीं आया।

लेकिन पचपनवे सेंकेड पर उन लोगों ने वाहर शोर-गुल की आवाज सुनीं। सव लोग एक-एक करके अपनी कुर्सी पर से उठे। घडी ने टिक कर के सत्तावनवा सेंकेंड वजाया और उसी समय क्लवघर का दरवाजा खुला और सैलानी लोगों की एक वडी भीड को चीरता हुआ अपने मित्रों के सामने आकर खडा हो गया।

सव ने देखा—हाँ, वह सचमुच सैलानी ही था।

हुआ यह कि उसने आठ वज कर पाँच मिनट पर हरफन मौला को अपने मित्र के घर रुपयों के प्रवध के लिये भेजा था। हरफन मौला खुशी से उछलता-कूदता सैलानी के मित्र के घर पहुँचा। लेकिन उस समय मित्र घर पर नहीं था। करीव वीस मिनट तक उसे उसकी वाट जाहनी पडी। आठ वज कर पैंतीस मिनट पर उसने मित्र का घर छोडा, लेकिन रास्ते में उसकी अजीव हालत हा रही थी। ऐसी दौड लगाये जा रहा था मानो अपनी जान लेकर भाग रहा हो। सिर की

टोपी उड गयी थी। जूते न जाने कहाँ रह गये थे। वह गिरता-पडता एकदम सडक के ऊपर उडता आ रहा था।

वह तीस मिनट के भीतर हाँफता-हाँफता सैलानी के पास वापस्म आया। उस समय उससे बोलते नहीं बन रहा था।

सैलानी ने पूछा, 'अरे भाई, क्या मामला है ?'

हरफन मौला बोला, 'मालिक—मालिक कल तो इतवार है।'

सैलानी ने जवाब दिया, 'नही सोमवार है।'

'नहीं आज शनिवार है। आप के मित्र ने कहा है कि कल इतवार होने की वजह से बैंक से रुपया नही मिलेगा।'

'शनिवार आज ? कल इतवार ? नहीं ऐसा कभी नही हो सकता।'

हरफन मौला ने खीझते हुये चिल्ला कर कहा, 'मैं जो कहता हूँ कि आज शनिवार है। आप एक दिन की गलती कर रहे हैं। हम लोग ठीक समय से लदन आ गये थे। लेकिन अब आप को क्लब पहुँचने में सिर्फ दस मिनट और बाकी हैं।' यह कह कर उसने अपने मालिक को कुर्सी पर से ढकेल कर खडा कर दिया।

सैलानी ने सरपट दौड लगायी। रास्ते में दो कुत्तो को कुचला, चार गाडियाँ से टकराया। कई रास्ते चलते आदमियों को जमीन पर गिराया। और इस तरह वह ठीक आठ बज कर पैंतालीस मिनट पर क्लबघर के भीतर दाखिल हुआ।

सैलानी अस्सी दिन मे सारी पृथ्वी का चक्कर लगा आया था। और तीन लाख रुपयो की बाजी जीत गया था।

लेकिन सैलानी महाशय तो बडे हिसाब-किताब से चलने वाले आदमी थे। फिर उनसे एक दिन की भूल कैसे हो गयी ? वह बीस दिसम्बर की सध्या को लदन पहुँच गये थे। फिर उन्होने उस दिन इक्कीस दिसम्बर कैसे मान लिया। उनसे यह भूल कैसे हो गयी, इसका कारण बिल्कुल साधारण है।

सैलानी पूरब की यात्रा कर रहे थे। अथात् वे सूरज की ओर जा रहे थे। इसलिये उस दिशा मे जब वे एक देशान्तर से दूसरे देशान्तर तक जाते थे—यानी एक डिग्री की यात्रा करते थे तो उनका दिन चार मिनट कम हो जाता था। पृथ्वी का पूरा गोला तीन सौ साठ डिगरियो मे बँटा हुआ है। इन डिगरियो के साथ चार का गुणा करने से पूरे चौबीस घटे-यानी एक दिन होता है। इसलिये सैलानी के हिसाब मे एक दिन का फेर पड गया। वह तो अपने हिसाब से इक्कीस दिसम्बर की सध्या को ही लदन पहुँचा था। लेकिन असल मे उस दिन बीस दिसम्बर था। वह बिना जाने ही एक दिन पहले लदन पहुँच गया था। उसके मित्र शनिवार को उसक आने की बाट जोह रहे थे और वह उस दिन इतवार समझ रहा था।

उसने वास्तव में अस्सी दिन के भीतर सारी दुनिया का चक्कर लगा डाला था। अपनी इस यात्रा क लिये उसे जहाज, रेल, घोडा गाडी तागा, बैलगाडी, हाथी नाव सभी

सलानी अस्सी दिन मे सारी पृथ्वी का चक्कर लगा आया था। और तीन लाख रुपयो की वाजी जीत गया था।

लेकिन सैलानी महाशय तो वडे हिसाव-किताव से चलने वाले आदमी थे। फिर उनसे एक दिन की भूल कैसे हो गयी ? वह वीस दिसम्वर की सध्या को लदन पहुँच गये थे। फिर उन्होंने उस दिन इक्कीस दिसम्वर कैसे मान लिया। उनसे यह भूल कैसे हो गयी, इसका कारण विल्कुल साधारण है।

सैलानी पूरव की यात्रा कर रहे थे। अथात् वे सूरज की ओर जा रहे थे। इसलिये उस दिशा मे जव वे एक देशान्तर से दूसरे देशान्तर तक जाते थे—यानी एक डिग्री की यात्रा करते थे तो उनका दिन चार मिनट कम हो जाता था। पृथ्वी का पूरा गोला तीन सौ साठ डिगरियो मे वँटा हुआ है। इन डिगरियो के साथ चार का गुणा करने मे पूरे चौवीस घटे-यानी एक दिन होता है। इसलिये सैलानी के हिसाव मे एक दिन का फेर पड गया। वह तो अपने हिसाव मे इक्कीस दिसम्वर की सध्या को ही लदन पहुँचा था। लेकिन असल में उस दिन वीस दिसम्वर था। वह विना जाने ही एक दिन पहले लदन पहुँच गया था। उसके मित्र शनिवार को उसके आने की वाट जोह रहे थे और वह उस दिन इतवार समझ रहा था।

उसने वास्तव मे अस्सी दिन के भीतर सारी दुनिया का चक्कर लगा डाला था। अपनी इस यात्रा के लिये उसे जहाज, रेल, घोडा गाडी, तागा, वैलगाडी, हाथी, नाव, सभी

कुछ का इस्तेमाल करना पड़ा था। वह पक्का सनकी था। लेकिन सनकी होने के साथ-साथ वह हिम्मत का भी बड़ा पक्का था। इतनी-इतनी विपत्तियों के आने पर भी उसने अपना धीरज नहीं खोया।

लेकिन अपनी इस बेसिर-पैर की यात्रा से उसे मिला क्या ? तुम कहोगे, कुछ नहीं। लेकिन कुछ नहीं कैसे ?

सैर-सपाटा करने से उसे बहुत सी नई-नई बातों का ज्ञान प्राप्त हो गया और इतना रुपया हाथ लगा सो अलग।

□□□